ISSN No. 2581-3528

# केशव संवाद

अंक : 1 अगस्त-2026 RNI No. UPHIN/2000/03766 ₹ : 20



# कथन



योग विश्व समुदाय को हमारी सांस्कृतिक धरोहर का अमूल्य उपहार है यह हमारे ऋषियों और मुनियों की हजारों वर्षों की साधना का परिणाम है, हमारे शास्त्रों में शरीर, मन और आत्मा के संतुलन को जीवन की सफलता का आधार माना गया है, योग उसी संतुलन को स्थापित करने का मार्ग है, योग शब्द का शाब्दिक अर्थ है जोड़ना, यह व्यक्ति को स्वयं से, समाज से, प्रकृति से तथा संपूर्ण मानवता को व्यापक विश्व-चेतना से जोड़ने का एक सशक्त माध्यम है।

**– द्रौपदी मुर्मू, राष्ट्रपति**

दुनिया के दूर-दूर के क्षेत्रों में कहीं भी जाएं, हमें कहीं न कहीं भारत की सांस्कृतिक विरासत के दर्शन अवश्य होते हैं। यह पूरे दक्षिण-पूर्व एशिया का दूसरा सबसे बड़ा मंदिर है और हमारी सांस्कृतिक विरासत की एक महत्वपूर्ण पहचान है। इस मंदिर में भगवान शिव, माँ दुर्गा और श्री गणेश जी की प्रतिमाएं स्थापित हैं। सदियों तक इस मंदिर में अत्यंत श्रद्धा और आस्था के साथ पूजा-अर्चना होती रही है। आज मुझे भी इस मंदिर के दर्शन करने और बिल्कुल शास्त्रोक्त विधि से पूजन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। यह मेरे जीवन के लिए अत्यंत चैतन्यपूर्ण और अविस्मरणीय क्षण है।

**– नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री**





संघ का कार्य व्यक्ति का निर्माण करना है। इसलिए जहाँ-जहाँ संघ का जीवन देखने को मिलता है, वहाँ संघ का संस्कार दिखाई देता है। जहाँ स्वयंसेवक है, वहाँ संघ का जीवन है, जहाँ स्वयंसेवक का कुटुंब है, वही संघ का कुटुंब है। वहाँ भी आपको संघ का जीवन देखने को मिलता है संघ की शाखा है जो संघ के जीवन का लेबोरेटरी रूप है।

**-डॉ. मोहन भागवत, सरसंघचालक, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ**

एक विचारशील लेखक और पत्रकार के नाते अटल जी ने लिखा है- हिन्दू तन-मन, हिन्दू जीवन, रग-रग हिन्दू, हिन्दू मेरा परिचय। यह कविता भी पांचजन्य में ही पहली बार छपी। तब से लेकर आज तक वह प्रसिद्ध है। यह देश के हर व्यक्ति के परिचय की ऐसी पंक्ति है, जो अपने आप में एक अमर कविता है। जैसे समाज और संस्कृति है, इसलिए इस समाज और इस संस्कृति के इस अखंड राष्ट्र जीवन के बारे में लिखने वाली ऐसी पंक्तियाँ अपने आप में अमर हो जाती हैं।

**-दत्तात्रेय होसबाले, सरकार्यवाह, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ**





महत्वपूर्ण यह है कि धरती माता हमें सब कुछ देती हैं। जीने के लिए सुंदर वातावरण देती हैं, खाने के लिए उत्तम अन्न देती हैं, सब्जियां, फल और फूल देती हैं। वह हमें जीवन जीने का अवसर प्रदान करती हैं, उस धरती माता के प्रति, जिसके बारे में हमारे पूर्वजों और हमारी कृषि परंपरा ने हमें सदैव यह प्रेरणा दी है कि धरती हमारी माता है और हम सब उसके पुत्र हैं। इसलिए एक पुत्र के रूप में अपने दायित्व का निर्वहन करते हुए तथा उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए हमें 'एक पेड़ माँ के नाम' अवश्य लगाना चाहिए।

**-योगी आदित्यनाथ, मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश**

# केशव संवाद

**RNI No. UPHIN/2000/03766**

**ISSN No. 2581-3528**

1 अगस्त, 2026

वर्ष : 26 अंक : 08



**सलाहकार समिति**

उदयभान सिंह, रविन्द्र कुमार चौहान
रविन्द्र कुमार श्रीवास्तव, मुकेश कुमार

**संपादक**

कृपाशंकर

**कार्यकारी संपादक**

प्रोफेसर (डॉ.) नीलम कुमारी

**प्रबंध निदेशक**

डॉ. अनिल कुमार निगम

**प्रबंध संपादक**

पंकज राणा

**पृष्ठ संयोजन**

वीरेंद्र पोखरियाल



**संपादकीय कार्यालय**

प्रेरणा शोध संस्थान न्यास
सी-56/20 सेक्टर-62, नोएडा -201309
फोन न. 0120 4565851
ईमेल : keshavsamvad@gmail.com
वेबसाइट : www.prernasamvad.in



स्वामी पंकज कुमार की ओर से मुद्रक/प्रकाशक रमन चावला द्वारा चन्द्र प्रभु ऑफसेट प्रिंटिंग वर्क प्रा.लि. नोएडा से मुद्रित तथा केशव भवन 105 आर्यनगर सूरजकुंड रोड मेरठ से प्रकाशित



इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। संपादक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निपटारा मेरठ की सीमा में आने वाली सक्षम अदालतों/फोरम में मान्य होगा। संपादक


## विषय सूची


आवरण ... 05
बोलते न्यायालय ... 06
अंतरराष्ट्रीय जगत में हिन्दुत्व ... 07
उद्बोधन ... 08
सोशल मीडिया में ट्रेंडिंग हिन्दुत्व ... 09
सरसंघचालक -ध्येय वाक्य ... 10
एनसीआर समाचार ... 11
आनुषांगिक संगठन ... 12
हिन्दुत्व के समाचार ... 13
उत्तर प्रदेश के प्रमुख तीर्थ ... 14
भारत की सीमाएं एवं सुरक्षा ... 15
महत्वपूर्ण दिवस ... 16
लव जिहाद पर विश्लेषण एवं पुरस्कों की ओर ... 17
उत्तर प्रदेश की सुर्खियां ... 18
आरोग्य ... 19
युवा संवाद ... 20
उत्तर प्रदेश के अनुकरणीय कार्य ... 21
महान क्रांतिकारी ... 22
वीरांगनाएं ... 23
खेल समाचार ... 24
विश्व पटल पर भारत ... 25
आत्मनिर्भरता के समाचार ... 26
पुस्तक समीक्षा ... 27
प्रेरक प्रसंग ... 28
एआई ... 29
प्रेरक कहानी ... 30
फिल्म समीक्षा ... 31
यंग अचीवर्स ... 32
बाल कहानी/कविता ... 33
पाठक कोना ... 34


पाठकगण आपसे आग्रह है कि नीचे दिए गए **QR CODE** को स्कैन कर केशव संवाद पत्रिका के सभी सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म से भी जुड़े।

@keshavksamvad | @KeshavSamvad | @KeshavSamvad | @KeshavSamvad

# विकसित भारत का संकल्प संस्कृति, नवाचार और युवा शक्ति का समन्वय

'उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत' अर्थात् उठो, जागो और श्रेष्ठ लक्ष्य की प्राप्ति तक निरंतर अग्रसर रहो। भारत की सनातन ज्ञान परंपरा का यह उद्घोष आज विकसित भारत के निर्माण का भी मूल मंत्र है। जब राष्ट्र अपने स्वर्णिम भविष्य की ओर अग्रसर होता है, तब उसकी सबसे बड़ी शक्ति उसके संस्कार, उसका ज्ञान और उसकी युवा चेतना होती है।

'केशव संवाद' का यह अंक इसी राष्ट्रीय चेतना का सशक्त प्रतिबिंब है। यह केवल एक पत्रिका नहीं, बल्कि विचारों का वह सेतु है जो अतीत के गौरव, वर्तमान के पुरुषार्थ और भविष्य की संभावनाओं को एक सूत्र में पिरोने का प्रयास करता है। भारतीय संस्कृति की विराटता, युवाओं के संकल्प, नवाचार की ऊर्जा, सामाजिक समरसता, आत्मनिर्भरता की भावना तथा विज्ञान और तकनीक के बढ़ते आयामों को समेटे यह अंक विकसित भारत की अवधारणा को नई दृष्टि प्रदान करता है।

आज भारत विश्व पटल पर नई ऊँचाइयों को स्पर्श कर रहा है। विज्ञान, शिक्षा, स्टार्टअप, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, अंतरिक्ष अनुसंधान और डिजिटल क्रांति के क्षेत्र में हमारे युवाओं की प्रतिभा विश्व को आश्चर्यचकित कर रही है। किंतु यह प्रगति तभी सार्थक होगी जब उसका आधार भारतीयता के जीवन मूल्यों से अनुप्राणित होगा। हमारी संस्कृति हमें सिखाती है कि विकास केवल आर्थिक समृद्धि नहीं, बल्कि व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के समग्र उत्थान का नाम है।

वर्तमान समय युवाओं का है। युवा केवल भारत का भविष्य नहीं, बल्कि उसका सशक्त वर्तमान भी हैं। उनमें नवाचार की क्षमता है, नेतृत्व का सामर्थ्य है और राष्ट्र निर्माण का संकल्प है। आवश्यकता इस बात की है कि उनकी ऊर्जा को शिक्षा, अनुसंधान, उद्यमिता और सामाजिक उत्तरदायित्व के साथ जोड़ा जाए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 इसी दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम है, जो ज्ञान, कौशल, संस्कार और नवाचार के समन्वय का मार्ग प्रशस्त करती है।

यह भी स्मरणीय है कि भारत की आत्मा उसकी सांस्कृतिक चेतना में निहित है। योग हमें संतुलन का संदेश देता है, भारतीय ज्ञान परंपरा हमें आत्मबोध का मार्ग दिखाती है और हमारी लोकतांत्रिक परंपराएँ हमें कर्तव्य एवं उत्तरदायित्व का बोध कराती हैं। जब विज्ञान संस्कृति का हाथ थामता है और नवाचार नैतिक मूल्यों के साथ आगे बढ़ता है, तभी एक सशक्त और संवेदनशील राष्ट्र का निर्माण संभव होता है।

आइए, हम सभी विकसित भारत के इस महायज्ञ में अपनी सार्थक सहभागिता सुनिश्चित करें। एक जागरूक नागरिक, एक उत्तरदायी युवा और एक संवेदनशील समाज के रूप में हम यह संकल्प लें कि ज्ञान को संस्कार से, नवाचार को राष्ट्रहित से और प्रगति को मानवता से जोड़ते हुए भारत को विश्व के लिए प्रेरणा का केंद्र बनाएंगे।

यही हमारी सांस्कृतिक विरासत है, यही हमारा राष्ट्रीय दायित्व है और यही विकसित भारत की दिशा में हमारा सामूहिक संकल्प भी।




# "एक पेड़ मां के नाम" पर्यावरण संरक्षण

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 5 जून 2024 को विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर दिल्ली के बुद्ध जयंती पार्क में एक पीपल का पौधा रोपित करते हुए "एक पेड़ मां के नाम" अभियान का शुभारंभ किया। उन्होंने इस अवसर पर देशवासियों से भारत वर्ष को बेहतर बनाने में योगदान देने का अनुरोध किया और कहा कि पिछले दशक में भारत वासियों ने वन संपदा को बढ़ाने के लिए कई सामूहिक प्रयास किए हैं, जिससे पूरे देश के वन क्षेत्र में वृद्धि हुई है। श्री मोदी ने कहा कि सतत विकास की दिशा में हमारे प्रयासों के लिए यह बहुत अच्छा अभियान है।

इस अभियान का उद्देश्य प्रत्येक नागरिक को अपनी मां के सम्मान में कम से कम एक पेड़ लगाने के लिए प्रेरित करना तथा पर्यावरण संरक्षण को जन आंदोलन का स्वरूप देना है। प्रधानमंत्री ने केवल भारत ही नहीं बल्कि विदेशों में रहने वाले भारतियों और समस्त विश्व के लोगों से भी इस अभियान में जुड़ने का आवाहन किया ताकि संपूर्ण विश्व को प्रदूषण मुक्त, हरा–भरा नये कलेवर के साथ भावी पीढ़ी के लिए स्वच्छ और सुरक्षित भविष्य का आधार बनाया जा सके।

इस अभियान की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि इसमें पर्यावरण संरक्षण को भावनाओं से जोड़ा गया है। जब कोई व्यक्ति अपनी मां के नाम पर एक पौधा लगता है तो वह केवल एक पौधा नहीं लगता बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए अपनी मां की विरासत के साथ–साथ स्वच्छ, सुरक्षित भविष्य की नींव भी रखता है। यह प्रयास मां के प्रति सम्मान और प्रकृति संरक्षण का अनूठा संगम है। इसका महत्व मां के अमूल्य योगदान को एक स्थाई स्मृति में बदलने और आने वाली पीढ़ियां के लिए एक हरा–भरा और सुरक्षित वातावरण सुनिश्चित करना है। यह पहल मां के निस्वार्थ प्रेम, त्याग और पोषण की तुलना प्रकृति के जीवन दायित्व से करती है। जिस प्रकार मां हमें जीवन भर पालती पोसती है, उसी तरह पेड़ भी हमें छाया, फल–फूल, शुद्ध हवा और जीवन के लिए आवश्यक संसाधन प्रदान करते हैं। अपनी मां के नाम पेड़ लगाना उनके प्रति आजीवन कृतज्ञता व्यत करने का एक सुंदर मध्यम है।

पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और उससे जुड़े कई सेवा संगठन भी स्थानीय स्तर पर वृक्षारोपण तथा पर्यावरण जागरूकता के अनेक कार्य कर रहे हैं। इसी संदर्भ में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत ने विजयदशमी के अवसर पर 12 अक्टूबर 2024 को अपने संबोधन में पंच परिवर्तन का आवाहन किया, जिसमें पर्यावरण संरक्षण प्रत्येक नागरिक के लिए एक प्रमुख करणीय कर्तव्य है।

12 जुलाई 2026 को उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने भी "एक पेड़ मां के नाम" अभियान को आगे बढ़ाते हुए इस वर्ष 35 करोड़ पौधे लगाने के विशाल वृक्षारोपण महाभियान का शुभारंभ किया। योगी जी ने कहा कि धरती मां का स्वास्थ्य सुरक्षित रखना हम सभी की जिम्मेदारी है। यह अभियान धरती माता के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करने का एक महान प्रयास है।

पेड़ों का महत्व केवल पर्यावरण तक सीमित नहीं है। ये हमें ऑक्सीजन, फल–फूल, औषधि, छाया और शुद्ध वातावरण प्रदान कराते हैं। तापमान को नियंत्रित करने, भू–जल संरक्षण, जैव विविधता बढ़ाने और वायु को शुद्ध रखने में पेड़ महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वैज्ञानिक भी मानते हैं कि जलवायु परिवर्तन और बढ़ते प्रदूषण से निपटने के लिए बड़े पैमाने पर वृक्षारोपण तथा मौजूदा वनों का संरक्षण अत्यंत आवश्यक है। एक छोटा सा पौधा भविष्य की सबसे बड़ी विरासत बन सकता है। इसलिए, आइए हम सभी एक पेड़ अवश्य लगाएं, उसकी देखभाल करें और आने वाली पीढियां को हरियाली युक्त भारत भारत उपहार में दें।

# डिजिटल पहचान : आधार के बढ़ते उपयोग की न्यायिक समीक्षा

संकलनकर्ता – डॉ. आभा सिंह, असिस्टेंट प्रोफेसर, अंग्रेजी विभाग महाराजा अग्रसेन कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

**डिजिटल युग ने शासन-प्रशासन को जितना सरल और पारदर्शी बनाया है, उतनी ही गंभीर चुनौतियाँ नागरिकों के संवैधानिक अधिकारों के समक्ष भी खड़ी की हैं। आज आधार संख्या बैंक खाते से लेकर मोबाइल सिम, सरकारी योजनाओं, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं और अनेक प्रशासनिक प्रक्रियाओं का अभिन्न हिस्सा बन चुकी है। किन्तु जब कोई डिजिटल पहचान-पत्र अपनी वैधानिक सीमा से आगे बढ़कर नागरिकता, निवास, जन्मतिथि अथवा मतदान पात्रता का आधार बनने लगे, तब यह केवल प्रशासनिक प्रश्न नहीं रह जाता है। इसी संदर्भ में जून 2026 में सर्वोच्च न्यायालय ने एक जनहित याचिका पर केंद्र सरकार, सभी राज्यों तथा निर्वाचन आयोग से जवाब माँगते हुए यह संकेत दिया कि आधार के उपयोग की वैधानिक सीमाओं पर पुनः गंभीर विचार आवश्यक है।**

एक अधिवक्ता द्वारा दायर की गई इस जनहित याचिका में कहा गया कि आधार अधिनियम 2016 की धारा 9 स्पष्ट रूप से कहती है कि आधार न तो नागरिकता का प्रमाण है और न ही मूल निवास का। इसके बावजूद अनेक सरकारी और गैर–सरकारी संस्थाएँ इसे जन्मतिथि, निवास, नागरिकता तथा नए मतदाता पंजीकरण जैसे उद्देश्यों के लिए स्वीकार कर रही हैं। याचिकाकर्ता का तर्क था कि इस प्रकार का उपयोग कानून की मूल भावना के विपरीत है और इससे प्रशासनिक भ्रम के साथ–साथ राष्ट्रीय सुरक्षा तथा निर्वाचन प्रक्रिया पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। सर्वोच्च न्यायालय की पीठ, जिसमें मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति सूर्यकांत और न्यायमूर्ति वी. मोहन शामिल थे, ने इन तर्कों को सुनने के बाद केंद्र और राज्यों को नोटिस जारी किया तथा मामले को विचारणीय संवैधानिक प्रश्न माना। उल्लेखनीय है कि न्यायालय ने इस चरण में अंतिम निर्णय नहीं दिया, बल्कि सभी पक्षों से उत्तर माँगा है।




इस विवाद की पृष्ठभूमि को समझना भी आवश्यक है। आधार योजना का प्रारंभ प्रत्येक नागरिक को विशिष्ट डिजिटल पहचान उपलब्ध कराने के लिए हुआ था। इसका मूल उद्देश्य सरकारी योजनाओं में पारदर्शिता लाना, लाभार्थियों की सही पहचान सुनिश्चित करना और अनुचित लाभार्थियों पर रोक लगाना था। समय के साथ आधार का उपयोग इतना बढ़ने लगा कि वह अनेक सेवाओं का अनिवार्य दस्तावेज़ बन गया। यहीं से यह प्रश्न उठने लगा कि क्या सुविधा के नाम पर आधार को उसकी वैधानिक सीमा से अधिक महत्व दिया जा रहा है? यदि किसी दस्तावेज का उद्देश्य केवल विशिष्ट पहचान स्थापित करना है, तो क्या उसे नागरिकता या मतदान पात्रता जैसे संवेदनशील विषयों का आधार बनाया जाना उचित है? दरअसल, यह पहला अवसर नहीं है जब सर्वोच्च न्यायालय डिजिटल पहचान और निजता के प्रश्न पर विचार कर रहा हो। वर्ष 2017 में न्यायमूर्ति के. एस. पुट्टस्वामी बनाम भारत संघ मामले में नौ न्यायाधीशों की संविधान पीठ ने सर्वसम्मति से यह घोषित किया था कि निजता का अधिकार संविधान के अनुच्छेद 21 के अंतर्गत जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता का अभिन्न अंग है। इसके बाद आधार संबंधी निर्णयों में भी न्यायालय ने यह स्पष्ट किया कि आधार एक उपयोगी प्रशासनिक साधन हो सकता है, किन्तु इसका उपयोग संविधान द्वारा संरक्षित नागरिक स्वतंत्रताओं का अतिक्रमण नहीं कर सकता। वर्तमान याचिका उसी संवैधानिक विमर्श की अगली कड़ी प्रतीत होती है।

इस पूरे विवाद का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि आज डिजिटल पहचान केवल एक कार्ड तक सीमित नहीं रह गई है। आधार से जुड़ी जानकारी बैंकिंग, स्वास्थ्य, शिक्षा, दूरसंचार, वित्तीय लेन–देन और अनेक सार्वजनिक सेवाओं तक पहुंचती है। यह विषय केवल कानून का नहीं, बल्कि नागरिक जागरूकता का भी है। सामान्य नागरिकों में यह धारणा प्रचलित है कि आधार प्रत्येक प्रकार का सार्वभौमिक दस्तावेज है, जबकि स्वयं भारतीय विशिष्ट पहचान प्राधिकरण (UIDAI) समय–समय पर स्पष्ट कर चुका है कि आधार का उद्देश्य मुख्यतः पहचान स्थापित करना है, नागरिकता सिद्ध करना नहीं। इस प्रकार, सर्वोच्च न्यायालय में लंबित यह मामला केवल एक जनहित याचिका नहीं, बल्कि डिजिटल भारत की संवैधानिक दिशा तय करने वाला महत्वपूर्ण विमर्श बन सकता है। इसलिए यह मामला केवल आधार कार्ड के उपयोग का नहीं, बल्कि उस लोकतांत्रिक संतुलन का है जिसमें राज्य की प्रशासनिक आवश्यकताओं और नागरिक की संवैधानिक स्वतंत्रताओं दोनों का समान रूप से संरक्षण हो।

# अमेरिका में हिन्दुओं से घृणा और मन्दिरों पर हमलों के निन्दा प्रस्ताव को भारी समर्थन

संकलनकर्ता – डॉ. विनोद कुमार, प्रभारी हिन्दी विभाग,राजकीय महाविद्यालय गाजियाबाद




अमेरिका की संसद के निचले सदन, प्रतिनिधि सभा में लाए गए उस प्रस्ताव को भारी समर्थन मिल रहा है, जिसमें हिन्दुओं के प्रति घृणा, हिन्दू–विरोधी कट्टरता तथा हिन्दू समुदाय के पूजा स्थलों पर हमलों की निंदा की गई है। हाल ही में इस प्रस्ताव का समर्थन करने वालों में एक बड़ा नाम कैलीफोर्निया का प्रतिनिधित्व करने वाले डेमोक्रेटिक पार्टी के सांसद रो खन्ना का भी है, जिन्होंने स्वयं द्वारा की गई एक पोस्ट में इस प्रस्ताव के समर्थन की घोषणा की। उन्होंने यह भी लिखा कि उन्हें सांसद श्री थानेदार द्वारा प्रतिनिधि सभा में पेश किए गए प्रस्ताव संख्या 69 को सह प्रायोजित करने पर गर्व है। अमेरिका की प्रतिनिधि सभा में हिन्दुओं से घृणा और मन्दिरों पर हमलों के विरुद्ध श्री थानेदार का प्रस्ताव, समानता और धार्मिक स्वतंत्रता की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। इस प्रस्ताव को अब तक राजा कृष्णमूर्ति और सुहास सुब्रमण्यम सहित 34 सांसद सह प्रायोजित कर चुके हैं जिसमें डेमोक्रेटिक पार्टी के साथ एक रिपब्लिकन पार्टी के सांसद भी शामिल हैं। भारतीय मूल के अमेरिकी सांसद श्री थानेदार ने अमेरिका की प्रतिनिधि सभा में एक महत्वपूर्ण प्रस्ताव प्रस्तुत किया, जिसमें हिन्दू अमेरिकियों के योगदान का सम्मान करने, हिन्दुओं के प्रति घृणा (हिन्दूफोबिया), धार्मिक भेदभाव तथा हिन्दू मंदिरों पर होने वाले हमलों की निंदा करने का आह्वान किया गया। यह प्रस्ताव जनवरी 2025 में H-Res-69 के रूप में पुनः प्रस्तुत किया गया। इस प्रस्ताव में कहा गया है कि हिन्दू धर्म विश्व के सबसे प्राचीन और प्रमुख धर्मों में से एक है तथा अमेरिका में लाखों हिन्दू नागरिक शिक्षा, विज्ञान, चिकित्सा, प्रौद्योगिकी, व्यापार, सेना और सार्वजनिक जीवन सहित अनेक क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। इसके बावजूद हाल के वर्षों में विभिन्न राज्यों में हिन्दू मंदिरों पर तोड़फोड़, धार्मिक प्रतीकों के अपमान और हिन्दू समुदाय के विरुद्ध घृणास्पद घटनाओं की खबरें सामने आई हैं। प्रस्ताव इन घटनाओं पर चिंता व्यक्त करते हुए स्पष्ट संदेश देता है कि किसी भी धर्म के प्रति घृणा और हिंसा लोकतांत्रिक समाज में स्वीकार्य नहीं हो सकती। श्री थानेदार ने प्रस्ताव के माध्यम से यह भी रेखांकित किया कि धार्मिक स्वतंत्रता अमेरिकी संविधान की मूल भावना है और प्रत्येक नागरिक को बिना भय के अपनी आस्था का पालन करने का अधिकार है। प्रस्ताव हिन्दू समुदाय के विरुद्ध पूर्वाग्रह, नस्लीय भेदभाव और धार्मिक असहिष्णुता की निंदा करता है तथा सभी समुदायों के बीच पारस्परिक सम्मान, संवाद और सद्भाव को बढ़ावा देने का आह्वान करता है। यद्यपि यह प्रस्ताव स्वयं कोई नया कानून नहीं बनाता, फिर भी इसका प्रतीकात्मक और नैतिक महत्व अत्यंत बड़ा है। अमेरिकी कांग्रेस द्वारा किसी समुदाय के विरुद्ध घृणा और हिंसा की औपचारिक निंदा उस समुदाय को यह विश्वास दिलाती है कि लोकतांत्रिक संस्थाएँ उसकी सुरक्षा, गरिमा और समान अधिकारों के प्रति प्रतिबद्ध हैं। प्रस्ताव में अमेरिकी संविधान द्वारा प्रदत्त धार्मिक स्वतंत्रता के अधिकार को दोहराते हुए कहा गया है कि किसी भी नागरिक को उसकी आस्था के कारण भय, हिंसा या भेदभाव का सामना नहीं करना चाहिए। इसमें संघीय तथा राज्य सरकारों, कानून–प्रवर्तन एजेंसियों और समाज से अपील की गई है कि वे हिन्दुओं सहित सभी धार्मिक समुदायों की सुरक्षा सुनिश्चित करें तथा घृणा–जनित अपराधों पर रोकथाम के उपाय किए जाएं। प्रस्ताव प्रस्तुत करते हुए सांसद श्री थानेदार ने कहा कि हिन्दू अमेरिकी समुदाय ने दशकों से अमेरिका की आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक प्रगति में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उनके अनुसार, किसी भी धार्मिक समुदाय के विरुद्ध घृणा और हिंसा अमेरिकी लोकतंत्र तथा समान नागरिक अधिकारों की भावना के विपरीत है। उन्होंने सभी नागरिकों से परस्पर सम्मान, सहिष्णुता और धार्मिक सद्भाव को बढ़ावा देने का आह्वान किया। इस प्रस्ताव का समर्थन कई हिन्दू–अमेरिकी संगठनों ने भी किया और इसे धार्मिक स्वतंत्रता की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम बताया।



# रज्जू भैया सैनिक विद्या मंदिर से मुख्यमंत्री का संदेश राष्ट्रभक्ति, अनुशासन और कर्तव्य ही सफलता की कुंजी




रज्जू भैया सैनिक विद्या मंदिर, बुलंदशहर के सम्मान समारोह में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने राष्ट्रनिर्माण, अनुशासन, शिक्षा, सैन्य परंपरा और भारतीय सांस्कृतिक विरासत के महत्व पर विस्तृत विचार रखे। उन्होंने अपने संबोधन की शुरुआत श्रद्धेय रज्जू भैया (प्रो. राजेन्द्र सिंह) को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए की और कहा कि उनका संपूर्ण जीवन भारत, भारतीयता तथा सनातन मूल्यों के संरक्षण और संवर्धन के लिए समर्पित था।

मुख्यमंत्री ने विद्या भारती द्वारा बुलंदशहर में सैनिक विद्यालय की स्थापना को ऐतिहासिक कदम बताया। उन्होंने विशेष रूप से बाबा राजपाल सिंह की सराहना की, जिन्होंने विद्यालय की स्थापना के लिए अपनी 32 बीघा भूमि दान में दी तथा कहा कि यह राष्ट्रसेवा और समाज के प्रति समर्पण का उत्कृष्ट उदाहरण है तथा आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणास्रोत रहेगा।

उन्होंने सैनिक विद्यालयों की विशेष भूमिका पर प्रकाश डालते हुए कहा कि सैनिक के जीवन का सबसे बड़ा मंत्र 'राष्ट्र प्रथम' होता है। सीमा पर तैनात सैनिक कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी देश की रक्षा करते हैं, इसलिए समाज का प्रत्येक नागरिक उनके प्रति सम्मान का भाव रखे। उन्होंने कहा कि सैनिक विद्यालयों का उद्देश्य ऐसे युवाओं का निर्माण करना है जिनमें अनुशासन, राष्ट्रभक्ति, नेतृत्व क्षमता और सेवा भावना विकसित हो। अपने उद्बोधन में योगी ने कहा कि किसी भी देश की उन्नति का सबसे बड़ा आधार आत्मानुशासन होता है। विद्यार्थियों को भी अनुशासित जीवन अपनाकर अपने भविष्य और राष्ट्र दोनों के निर्माण में योगदान देना चाहिए।

मुख्यमंत्री ने श्रद्धेय रज्जू भैया के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए कहा की वे इलाहाबाद विश्वविद्यालय में भौतिकी के प्रख्यात प्रोफेसर रहे तथा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के चतुर्थ सरसंघचालक के रूप में उन्होंने लाखों स्वयंसेवकों का मार्गदर्शन किया। उनका सरल, विनम्र और प्रेरणादायी व्यक्तित्व समाज के लिए अनुकरणीय था। उन्होंने बताया कि उत्तर प्रदेश सरकार ने प्रयागराज में रज्जू भैया के नाम पर विश्वविद्यालय की स्थापना की है तथा यह सैनिक विद्या मंदिर भी उनके आदर्शों को आगे बढ़ाने का महत्वपूर्ण माध्यम बनेगा।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अमृत महोत्सव के अवसर पर दिए गए 'पंच प्रण' का उल्लेख करते हुए कहा कि विकसित भारत के निर्माण के लिए प्रत्येक नागरिक को इन संकल्पों को अपनाना होगा। पहला संकल्प गुलामी की मानसिकता से मुक्त होना है। दूसरा, भारत की गौरवशाली विरासत–ऋषि–मुनियों, तीर्थस्थलों और पवित्र ग्रंथों–पर गर्व करना तथा उसके संरक्षण के लिए कार्य करना है। तीसरा संकल्प सामाजिक समरसता स्थापित करना है, जिससे जाति, भाषा और क्षेत्र के आधार पर समाज में विभाजन समाप्त हो। चौथा संकल्प सेना, अर्धसैनिक बलों और पुलिस के प्रति सम्मान और श्रद्धा का भाव रखना है। पाँचवां संकल्प नागरिक कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन करना है, क्योंकि अधिकारों के साथ कर्तव्य भी समान रूप से आवश्यक हैं।

विद्यार्थियों को अनुशासन, राष्ट्रप्रेम और भारतीय संस्कृति को अपने जीवन का आधार बनाएं। शिक्षा के साथ–साथ चरित्र निर्माण और सनातन मूल्यों की रक्षा के लिए सदैव तत्पर रहें। उन्होंने कहा कि बुलंदशहर देश को सर्वाधिक सैनिक और सैन्य अधिकारी देने वाले जनपदों में से एक है, इसलिए इस क्षेत्र की गौरवशाली सैन्य परंपरा को आगे बढ़ाना विद्यार्थियों का दायित्व है।

अपने संबोधन में कहा कि इतिहास उन्हीं लोगों ने बनाया है जो अनुशासित, परिश्रमी और निरंतर प्रयासरत रहे हैं। उन्होंने विद्यार्थियों से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और रज्जू भैया के आदर्शों से प्रेरणा लेकर राष्ट्ररक्षा, समाजसेवा तथा जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान देने का आह्वान किया तथा विद्यालय के उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ दीं।




# सोशल मीडिया पर ट्रेंडिंग : हिन्दू धर्म, आस्था से जुड़ी प्रमुख: ख़बरें

संकलनकर्ता – प्रकाश श्रीवास्तव

**29 जून 2026 - अहमदाबाद जगन्नाथ रथ यात्रा की जल यात्रा - अहमदाबाद, गुजरात :** 149वीं जगन्नाथ रथ यात्रा की धार्मिक तैयारियों का शुभारम्भ जल यात्रा से हुआ। 108 कलशों से अभिषेक और वैदिक अनुष्ठानों की तस्वीरें व वीडियो सोशल मीडिया पर व्यापक रूप से साझा किए गए।

**30 जून 2026 - जगन्नाथ रथ यात्रा की तस्वीरें - पुरी, ओडिशा :** विशाल भक्त–समुदाय और रथ यात्रा के दृश्य वाले इस पोस्ट ने भक्तों में वार्षिक धार्मिक उत्सव की भावनात्मक स्मृति को जगाया। Reddit पर पोस्ट को 291 वोट मिले।

**8 जुलाई 2026 - प्रधानमंत्री मोदी का प्राम्बानन मंदिर में पूजा-अर्चना का वीडियो - जावा, इंडोनेशिया :** प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लगभग 1,000 वर्ष पुराने हिन्दू प्राम्बानन मंदिर में पूजा–अर्चना की। भगवान शिव, विष्णु और ब्रह्मा को समर्पित मंदिर से जुड़े दृश्य भारत की हिन्दू सभ्यता और वैश्विक सांस्कृतिक विरासत पर सोशल मीडिया चर्चा का विषय बने।

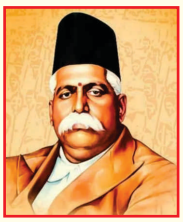
**10 जुलाई 2026 - योगिनी एकादशी, भगवान विष्णु और आध्यात्मिक शुद्धि के पोस्ट - सम्पूर्ण भारत :** धार्मिक पेजों पर भगवान विष्णु, मंत्र, व्रत–कथा और आध्यात्मिक शुद्धि से जुड़े पोस्टों का प्रसार हुआ। यह हिन्दू धार्मिक कैलेंडर आधारित सोशल मीडिया कंटेंट का प्रमुख ट्रेंड रहा।

**14 जुलाई 2026 - आषाढ़ अमावस्या : पितृ तर्पण और हिन्दू धार्मिक अनुष्ठान - सम्पूर्ण भारत -** आषाढ़ अमावस्या के अवसर पर पितरों के लिए तर्पण, पिंडदान, पीपल पूजा और धार्मिक स्नान से जुड़े पोस्ट और धार्मिक कैलेंडर कंटेंट खूब साझा किए गए।

**14 जुलाई 2026-800 वर्ष पुराने खंडोबा मंदिर की अनूठी धार्मिक परंपरा - जेजुरी, महाराष्ट्र :** जेजुरी के खंडोबा मंदिर से जुड़ी वह परंपरा सोशल मीडिया पर चर्चा में आई जिसमें हिन्दू और मुस्लिम श्रद्धालुओं द्वारा मंदिर में आस्था व्यक्त करने की बात सामने आई। यह कहानी हिन्दू धार्मिक विरासत और सांस्कृतिक सह–अस्तित्व के दृष्टिकोण से विशेष रूप से चर्चित रही।

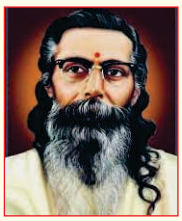
**15 जुलाई 2026 - पुरी जगन्नाथ रथ यात्रा 2026 - 'जय जगन्नाथ' सोशल मीडिया लहर - पुरी, ओडिशा :** भगवान जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्रा के भव्य रथों की तस्वीरें, भक्तों की भीड़ और 'जय जगन्नाथ' संदेश इस अवधि के सबसे बड़े हिन्दू धार्मिक सोशल मीडिया ट्रेंड में रहे। रथ यात्रा 15 जुलाई 2026 को आयोजित हुई।

**15 जुलाई 2026 - कनक दुर्गा मंदिर के मास्टर प्लान की खबर - विजयवाड़ा, आंध्र प्रदेश :** कनक दुर्गा मंदिर के विकास और तीर्थयात्रियों की सुविधाओं को बेहतर बनाने के लिए मास्टर प्लान पर काम चर्चा में रहा। यह मंदिर–आधारित धार्मिक पर्यटन और आधुनिक तीर्थ प्रबंधन पर सोशल मीडिया चर्चा का हिस्सा बना।



हिन्दू जाति का सुख ही मेरा और कुटुम्ब का सुख है ; हिन्दू जाति पर आने वाली विपत्ति हम सभी के लिए महासंकट है और हिन्दू जाति का अपमान हम सभी का अपमान है। ऐसी आत्मीयता की वृत्ति हिन्दू मात्र के रोम–रोम में व्याप्त होनी चाहिए। यही तो है राष्ट्रधर्म का मूलमंत्र।

–डॉ. केशवराव बलिराम हेडगेवार



जिस प्रकार किसी पेड़ के बढ़ते समय उसकी सूखी शाखाएँ गिरकर उनके स्थान पर नई–नई शाखाएँ खड़ी हो जाती हैं उसी प्रकार अपने समाज में भी एक समय विद्यमान वर्ण व्यवस्था में बदल कर अपने लिए आवश्यक नई रचना समाज करेगा। यह समाज की विकास प्रक्रिया का स्वाभाविक अंग है।

– श्री गुरुजी



सांस्कृतिक अर्थ से हिन्दू शब्द का उपयोग राष्ट्रीय अर्थ में होता है उपासना पद्धति के अर्थ में नहीं। उपासना पद्धति बदलने से पूर्वज नहीं बदलते, परम्पराएं, संस्कृति, राष्ट्रीयता नहीं बदलती।

– बाला साहब देवरस

–डेस्क



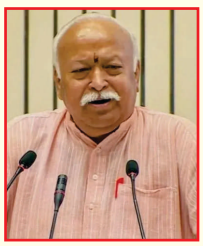
भारत दुनिया का सबसे श्रेष्ठ देश भी होगा। सबसे धनवान देश होना आवश्यक नहीं है। वह चरित्रवान होगा, समृद्ध भी होगा और विश्व को इस झगड़े तथा संघर्ष के रास्ते से हटाकर समन्वय, प्रेम, परस्पर मिलकर चलने और भाईचारे के मार्ग पर ले जा सकेगा। मगर यह कार्य वही भारत कर सकेगा, जो स्वयं मजबूत हो, समृद्ध हो और किसी भी बात के लिए किसी के आगे हाथ फैलाने को तैयार न हो।

– रज्जू भैय्या



हमारे यहाँ धर्म का अर्थ केवल रिलीजन नहीं है। हमारे यहाँ धर्म के चार प्रमुख आयाम हैं। पहला, व्यक्ति का समाज से संबंध। हमारे यहाँ चार प्रकार के अस्तित्व माने गए हैं – व्यक्ति, समाज, प्रकृति और परमात्मा। इन सभी के बीच बाधारहित, सामंजस्यपूर्ण व्यवहार सुनिश्चित करने के लिए जो भी नियम और व्यवस्थाएँ हैं, वे सभी धर्म के अंतर्गत आती हैं। उदाहरण के लिए, व्यक्ति और समाज के बीच उचित संबंध स्थापित करना भी धर्म का ही एक महत्वपूर्ण अंग है।

– कु.सी. सुदर्शन



'जाकी रही भावना जैसी प्रभु मूरत तिन देखी तैसी' हमने सबका स्वागत किया, सबको रचाया बचाया सबको ज्ञान दिया। बाहर भी गए सेना नहीं ले गए, ज्ञान ले गए। कुछ सेवा करने के लिए आवश्यक वैद्यकीय ज्ञान विज्ञान व विद्या ले गए, संस्कृति ले गए हमने दोस्ती की और दोस्ती के आधार पर अपनी अच्छी बातों को सारी दुनिया को दिया। ऐसे भारतवर्ष में हम जी रहे थे।

– डॉ. मोहन भागवत

संकलनकर्ता – नन्द किशोर शर्मा, पूर्व प्रवक्ता, दिल्ली शिक्षा विभाग

# पहली मेक इन इंडिया हाइड्रोजन ट्रेन पटरी पर दौड़ी



जींद : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने विगत दिनों जींद रेलवे स्टेशन पर भारत की पहली हाइड्रोजन चालित ट्रेन को हरी झंडी दिखा कर रवाना किया। मोदी ने इस ट्रेन को मेक इन इंडिया का सफल उदाहरण बताते हुए कहा कि यह दुनिया की सबसे लंबी शक्तिशाली हाइड्रोजन से चलने वाली ट्रेन है। उन्होंने देश की पहली इस हाइड्रोजन ट्रेन को मेक इन इंडिया अभियान की एक सफल एवं सशक्त उपलब्धि बताया। इस अवसर पर प्रधानमंत्री मोदी ने हरियाणा में शिक्षा स्वास्थ्य और मूलभूत ढांचे से जुड़ी 14700 करोड़ की परियोजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास भी किया। रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने इस अवसर पर कहा कि हरित ऊर्जा से चलने वाली यह हाइड्रोजन ट्रेन भारतीय इंजीनियरिंग क्षमता का एक सफल एवं ऐतिहासिक उदाहरण है। रेलवे के एक बयान के अनुसार ट्रेन जींद से सुबह 7:40 बजे रवाना होकर 12 स्टेशनों से गुजरते हुए 9:40 बजे सोनीपत पहुंचेगी। इसका अनुमानित किराया 10 से 35 रुपए हो सकता है।

# अपैरल पार्क और इलेक्ट्रॉनिक सिटी से गौतम बुद्ध नगर की बदलेगी तस्वीर : योगी



मुरादनगर : मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शुक्रवार को मुरादनगर स्थित कुशल पाल त्यागी मेमोरियल डिग्री कॉलेज में स्थानीय विधायक अजीत पाल त्यागी के पिता और पूर्व कैबिनेट मंत्री राजपाल त्यागी की प्रतिमा अनावरण समारोह के दौरान जनसभा को संबोधित करते हुए कहा कि गौतम बुद्ध नगर में अपैरल पार्क, इलेक्ट्रॉनिक सिटी समेत कई परियोजनाओं पर काम चल रहा है। इनके पूरा होने पर यहां की तस्वीर बदल जाएगी। मुख्यमंत्री ने गौतम बुद्ध नगर के विकास की चर्चा करते हुए कहा कि पिछले दिनों प्रधानमंत्री ने नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट का उद्घाटन किया। यमुना अथॉरिटी क्षेत्र में फिल्म सिटी का निर्माण हो रहा है। अपैरल पार्क भी बन रहा है तथा मेडिकल सिटी और इलेक्ट्रॉनिक सिटी का निर्माण हो रहा है। इससे गौतम बुद्ध नगर के विकास की एक नई तस्वीर उभर कर आएगी। इसके साथ–साथ उन्होंने कहा कि गंगा एक्सप्रेसवे को मेरठ से हरिद्वार तक ले जाया जाएगा।

# दिल्ली का इतिहास सामाने लाएंगे छात्र



नई दिल्ली : राजधानी के आधिकारिक और प्रामाणिक इतिहास को और विस्तार से दुनिया के सामने लाने के लिए दिल्ली सरकार ने महत्वपूर्ण निर्णय लिया है। दिल्ली की ऐतिहासिक विरासत का वैज्ञानिक अध्ययन, दस्तावेजीकरण और डिजिटलीकारण करने के लिए सरकार ने अभिलेखागार अनुसंधान फैलोशिप और पुरातत्व अनुसंधान फैलोशिप योजनाओं को मंजूरी दी है। इसके माध्यम से दिल्ली के हजारों वर्षों के इतिहास को शोध आधारित और प्रामाणिक रूप से नई पीढ़ी और दुनिया भर के शोधकर्ताओं तक पहुंचाया जाएगा। मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने कहा है कि दिल्ली केवल देश की राजधानी ही नहीं, बल्कि हजारों वर्षों के इतिहास, संस्कृति और सभ्यता की जीवंत धरोहर भी है। इस अमूल्य विरासत का संरक्षण, उसका वैज्ञानिक अध्ययन, व्यवस्थित दस्तावेजीकरण और नई पीढ़ी तक उसकी पहुंच सुनिश्चित करना सरकार की प्राथमिकता है। इस योजना के अंतर्गत प्रत्येक वर्ष की अवधि के लिए कुल 15 फेलो नियुक्त किए जाएंगे, जिन्हें 25 से 50 हजार तक की फेलोशिप दी जाएगी।

# संस्कार भारती

संकलनकर्ता – प्रकाशवीर, पूर्व प्रधानाचार्य, शिशुमंदिर

**मुख्यालय :** माधव भवन 173 वीर सावरकर नगर (जयपुर हाउस) आगरा।

**ध्येय वाक्य :** 'सा कला या विमुक्तये' कला वह है जो मुक्ति प्रदान करती है।

**प्रस्तावना :** भारत सदा से ही कला प्रधान देश रहा है, कला मन को शांति प्रदान करती है। लोक कलाओं ने ही इतिहास और अपनी गौरवशाली संस्कृति को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुंचाया है।

**उद्देश्य व स्थापना :** पुरानी और आधुनिक कलाओं का संरक्षण और संवर्धन हो, कला के नाम पर फैलाया जा रहा सांस्कृतिक प्रदूषण समाप्त हो तथा ललित कलाओं द्वारा राष्ट्रीय चेतना का विकास हो, इस उद्देश्य से 'पदमश्री' स्वर्गीय विष्णु श्रीधर वाकणकर तथा संघ के वरिष्ठ प्रचारक 'पदमश्री' योगेंद्र जी ने 14 जनवरी 1981 को मकर संक्रांति के दिन लखनऊ में संस्कार भारती की स्थापना की।

**प्रमुख कार्यक्रम-** देश के लगभग हर जिले और नगर में गठित संस्कार भारती की इकाईयां प्रतिवर्ष 6 उत्सव विशेष रूप से मनाती है 1–वर्ष प्रतिपदा 2–गुरु पूर्णिमा 3–श्री कृष्ण जन्मोत्सव 4–दीपोत्सव 5–गणतंत्र दिवस 6–माघ पूर्णिमा (भरत मुनि जयंती)।

**सामाजिक परिवर्तन-** कला के सभी क्षेत्रों (नृत्य, गायन, वादन, नाटक आदि) में संस्कार भारती ने सैकड़ों पुराने और प्रतिष्ठित कलाकारों को अपने साथ जोड़ा है। साथ ही प्रशिक्षण एवं मंच देकर देश और धर्म के प्रति जागृति फैलाने वाले हजारों नए कलाकारों को भी आगे बढ़ाया है।

संस्कार भारती ने दूरस्थ गांव, वनों और पर्वतों में रहने वाले जनजातीय कलाकारों को सामने लाकर उन्हें तथा उनकी लुप्त हो रही कलाओं को पुनर्जीवित किया है।

संस्कार भारती ने अपने कार्यक्रमों के माध्यम से समाज को यह संदेश भी दिया है कि कला केवल मनोरंजन या पैसा कमाने का माध्यम नहीं है अपितु ईश्वर एवं मोक्ष प्राप्ति की साधना है।

# राष्ट्रीय सेवा भारती

**मुख्यालय :** सेवा कुंज माता मंदिर गली झंडेवालान, नई दिल्ली 110051।

**प्रस्तावना :** संघ विचार की सभी संस्थाएं कुछ न कुछ सेवा का कार्य अवश्य करती हैं। पर इसे संस्थागत रूप आपातकाल की समाप्ति के बाद मिला जब सरसंघचालक श्री बाला साहब देवरस ने यह आह्वान किया कि निर्धन और वंचितों को साथ लिए बिना हमारा परम वैभव का लक्ष्य पूरा नहीं होगा और इन्हें साथ लाने का सर्वश्रेष्ठ माध्यम सेवा कार्य है।

**सांगठनिक स्वरूप :** राष्ट्रीय सेवा भारती का सांगठनिक स्वरूप बहुत ही सशक्त तथा व्यवस्थित है। नगर/ खंड, जिला, विभाग, प्रांत, क्षेत्र व राष्ट्रीय स्तर तक सभी स्तरों पर इकाईयां गठित हैं।

**करणीय कार्य :** सेवा भारती नगर व गांव की निर्धन /अभावग्रस्त बस्तियों में शिक्षा, चिकित्सा तथा स्वावलंबन के केंद्र चलाती है। कुछ संस्थाएं ग्रामीण विकास के क्षेत्र में भी सक्रिय है।

**उद्देश्य :** राष्ट्रीय सेवा भारती का उद्देश्य है कि शैक्षिक संस्थानों तथा समर्पित कार्यकर्ताओं के सामूहिक प्रयास से देश के पिछड़े, पीड़ित तथा अभावग्रस्त लोगों के जीवन में सार्थक बदलाव ला सकें। इसके लिए उन्हें शिक्षित, स्वस्थ और स्वावलंबी बनाना होगा। इससे जहां एक ओर देश सशक्त होगा, वहीं दूसरी ओर समरसता की भावना जागृत होने से समाज के सभी वर्गों में सुख और शांति बनेगी। इसके लिए हर राज्य में सेवा संगम आयोजित किए जाते हैं। इनमें सैकड़ों संस्थाएं अपने स्टॉल तथा प्रदर्शनी आदि लगाती हैं। इससे छोटी संस्थाओं को भी राष्ट्रीय पहचान मिलती है।

**सामाजिक परिवर्तन :** सेवा केंद्र चलाने वाले कार्यकर्ता उस गांव/ बस्ती में संपर्क भी करते हैं तथा स्थानीय लोगों को अपने साथ सेवा कार्य के लिए प्रेरित करते हैं। उनको अनेक कुरीतियों, व्यसनों व मादक पदार्थों के सेवन आदि से दूर कर उनमें शिक्षा, चिकित्सा तथा स्वावलंबन के कार्यों की रुचि जागृत कर राष्ट्र की मुख्य धारा से जोड़ने का कार्य सेवा भारती कर रही है।

# वाराणसी में अवैध धर्म परिवर्तन मामले में छह गिरफ्तार!

संकलनकर्ता – डॉ. रामशंकर, सहायक प्राध्यापक, आईआईएमटी कॉलेज ऑफ मैनेजमेंट, ग्रेटर नोएडा




**16 जून 2026- नागपुर, महाराष्ट्र : महिला ने जबरन धर्म परिवर्तन और ब्लैकमेल का आरोप लगाया, दो आरोपी गिरफ्तार** - नागपुर में एक महिला द्वारा सोशल मीडिया पर वीडियो जारी कर जबरन धर्म परिवर्तन, ब्लैकमेल और दुष्कर्म के आरोप लगाए जाने के बाद पुलिस ने मामला दर्ज किया। पुलिस ने दो आरोपियों को गिरफ्तार कर जांच शुरू की। अधिकारियों के अनुसार मामले की जांच विभिन्न साक्ष्यों और शिकायत के आधार पर की जा रही है तथा आगे की कार्रवाई जांच के निष्कर्षों के अनुसार होगी। आरोपों की पुष्टि न्यायिक प्रक्रिया के बाद ही होगी।

**19 जून 2026– नई दिल्ली : छत्रपति शिवाजी महाराज द्वारा नेताजी पालकर की घर वापसी की 350वीं वर्षगांठ पर देशभर में कार्यक्रम**- देश के अनेक राज्यों में हिन्दू संगठनों ने छत्रपति शिवाजी महाराज द्वारा सेनापति नेताजी पालकर की ऐतिहासिक 'घर वापसी' की 350वीं वर्षगांठ मनाई। विभिन्न सभाओं, व्याख्यानों और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में इसे धार्मिक स्वतंत्रता, सांस्कृतिक पहचान और भारतीय इतिहास की महत्वपूर्ण घटना बताया गया। वक्ताओं ने सनातन परंपराओं के संरक्षण और सामाजिक जागरूकता पर भी बल दिया।

**26 जून 2026 : अयोध्या, उत्तर प्रदेश** - SIT रिपोर्ट के बाद गिरफ्तारी : राम मंदिर चढ़ावा घोटाले की SIT रिपोर्ट आने के बाद पुलिस ने आठ लोगों को गिरफ्तार किया। योगी सरकार ने जीरो टॉलरेंस नीति अपनाई और श्रद्धालुओं को आश्वस्त किया कि मंदिर की पवित्रता सुरक्षित रहेगी।

**राम मंदिर ट्रस्ट से जुड़े मामलों की निष्पक्ष जांच की मांग :** ज्योतिर्मठ के शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती ने राम मंदिर से जुड़े कथित वित्तीय अनियमितताओं के मामलों की निष्पक्ष जांच की मांग की। उन्होंने कहा कि धार्मिक संस्थाओं की पारदर्शिता बनी रहनी चाहिए। इस विषय पर विभिन्न सामाजिक और धार्मिक संगठनों की भी प्रतिक्रियाएं सामने आईं। मामले से संबंधित जांच और आधिकारिक प्रक्रिया जारी है।

**3 जुलाई 2026 – कुशलनगर, कर्नाटक : कथित धर्म परिवर्तन के विरोध में विशाल रैली, सख्त कार्रवाई की मांग** - कर्नाटक के कुशलनगर में बड़ी संख्या में लोगों ने कथित अवैध धर्म परिवर्तन के विरोध में रैली निकाली। प्रदर्शनकारियों ने प्रशासन से आरोपों की निष्पक्ष जांच और दोषी पाए जाने वालों के विरुद्ध कड़ी कानूनी कार्रवाई की मांग की। स्थानीय प्रशासन ने कहा कि सभी शिकायतों की विधि सम्मत जांच की जाएगी और कानून के अनुसार कार्रवाई होगी।

**9 जुलाई 2026– वाराणसी, उत्तर प्रदेश - कथित अवैध धर्म परिवर्तन मामले में छह गिरफ्तार** - वाराणसी के एक गांव में कथित अवैध धर्म परिवर्तन के आरोप में पुलिस ने छह लोगों को गिरफ्तार किया। पुलिस के अनुसार शिकायत मिलने के बाद जांच की गई और संबंधित धाराओं में मामला दर्ज किया गया। आरोपियों से पूछताछ जारी है। मामले की सत्यता का अंतिम निर्णय न्यायिक प्रक्रिया के बाद होगा।

**हैदराबाद, तेलंगाना : दंपती की मौत के मामले में बेटे ने जबरन धर्म परिवर्तन का आरोप लगाया** - तेलंगाना में रेलवे ट्रैक पर मिले दंपती के शवों के मामले में नया मोड़ तब आया जब उनके बेटे ने आरोप लगाया कि परिवार पर जबरन धर्म परिवर्तन का दबाव बनाया गया था। पुलिस ने कहा कि इन आरोपों को भी जांच के दायरे में शामिल किया गया है। अधिकारियों के अनुसार मृत्यु के कारणों और लगाए गए आरोपों की अलग–अलग जांच की जा रही है तथा अंतिम निष्कर्ष जांच पूरी होने के बाद ही सामने आएंगे।




# पुण्यस्थली चित्रकूट

- अशोक सिन्हा, उपाध्यक्ष, विश्व संवाद केन्द्र, अवध

चित्रकूट में भगवान राम ने बनवास के समय निवास किया था। चित्रकूट सदा से सनातन की तपस्थली रहा है। महर्षि अत्रि–अनसूया का यहां आश्रम है। उत्तर प्रदेश के बांदा जनपद तथा मध्य प्रदेश के सतना जनपद की सीमा पर स्थित चित्रकूट युगों से भारतवर्ष की आध्यात्मिक, धार्मिक, सांस्कृतिक महिमा का केंद्र रहा है। चित्रकूट वही पुण्यस्थली है जहां सृष्टि की रचना के पूर्व ब्रह्मा जी ने यज्ञ किया था तथा इस क्षेत्र का अधिपति भगवान शंकर को नियुक्त किया था। विंध्य पर्वतमाला के आँचल में यहां हरीतिमा से युक्त मंदाकिनी नदी की कलकल छल छल बहती जलराशि, स्फटिक शिला की सुरम्य सुंदरता देखने लायक है। बांदा जनपद के राजापुर ग्राम में संत तुलसी दास ने जन्म लिया तथा यहां की ऊर्जा से महर्षि वाल्मीकि ने लौकिक संस्कृत के आदिकाव्य की रचना की। भगवान राम, लक्ष्मण तथा सीता जी ने बनवास के अधिकांश समय को व्यतीत किया तथा अक्षय शक्ति संचय कर के आसुरी शक्तियों का विनाश किया।

1973 से यहां राष्ट्रीय स्तर पर रामायण मेले का आयोजन किया जा रहा है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक, प्रसिद्ध समाजसेवी स्व.नानाजी देशमुख ने यहीं मध्य प्रदेश की सीमा पर समाजसेवा के अनेक प्रकल्प तथा प्रसिद्ध चित्रकूट विश्वविद्यालय की स्थापना भी की है। भारत सरकार ने चित्रकूट में यात्री निवास बनवाया था। उत्तर प्रदेश की योगी सरकार ने इस क्षेत्र का सुंदर विकास किया है तथा आवागमन, घाट सुंदरीकरण, यात्रियों के ठहरने की उत्तम व्यवस्था, पर्यटन सुविधाओं का विकास किया है। मंदाकिनी नदी को पयस्विनी भी कहते हैं जो सुरम्य जंगलों से हो कर बहती हैं। इसके बायें तट पर कामतानाथ हैं जहाँ नदी के किनारे चौबीस घाट हैं। इनमें से रामघाट, घृत कल्पघाट, राघव घाट, प्रयाग, कैलाश घाट प्रमुख हैं। रामघाट के निकट ही पर्णकुटी में भगवान राम निवास करते थे। यहां के कई दर्शनीय स्थानों में सती अनसूया, अत्रि दत्तात्रेय और हनुमान जी के मंदिर हैं। मंडरांचल जहां से मंदाकिनी नदी निकलती हैं। जानकी कुंड, स्फटिक शिला, गुप्त गोदावरी गुफा, भरतपुर तथा तुलसीदास के जन्मस्थान राजापुर यहां के प्रमुख दर्शनीय स्थल हैं।

आधुनिक युग के संत महात्माओं तथा साहित्यकारों केशव, रहीम, भूषण और निराला ने भी इस पावन भूमि को अपना कर्मक्षेत्र बना कर अपने को धन्य बनाया है। बांदा से झाँसी मानिकपुर रेलवे लाइन पर चित्रकूट 80 किलोमीटर दक्षिण पूर्व में स्थित है। उत्तर प्रदेश सरकार ने वाराणसी, अयोध्या, प्रयागराज चित्रकूट सर्किट बना कर सड़क और रेलवे से इसे जोड़ा है तथा यात्री सुविधाओं का विकास किया है।

**चित्रकूट के घाट पर भई संतन की भीड़।**
**तुलसीदास चंदन घिसें, तिलक देत रघुबीर।।**

रामचरित मानस की यह चौपाई बताती है की तुलसीदास ने चित्रकूट घाट पर बहुत समय बिताया है। घाट पर उनके निवास का एक छोटा सा कमरा भी दर्शकों को दिखाया जाता है। अब चित्रकूट में तीर्थयात्रियों और पयर्टकों की संख्या दिनोदिन बढ़ती जा रही है अतः कई होटल और गेस्टहाउस भी बन गयें है। यहां पहुंचने के लिये लखनऊ, प्रयागराज, या कानपुर से भी जाया जा सकता है।

# मिजोरम व म्यांमार सीमा : नए दौर का नया भारत

संकलनकर्ता– डॉ. अनुज, सहायक प्राध्यापक (अतिथि) दिल्ली स्कूल ऑफ जर्नलिज्म, दिल्ली विश्वविद्यालय

**भारत की सीमाएं केवल भौगोलिक रेखाएं नहीं, बल्कि उसकी संप्रभुता, सुरक्षा और राष्ट्रीय एकता की आधारशिला हैं। पड़ोसी देशों के साथ अंतरराष्ट्रीय सीमाओं को लेकर चुनौतियां बनी रहती हैं। बदलते वैश्विक और क्षेत्रीय परिदृश्य में भारत की सीमाएं सामरिक दृष्टि से और अधिक महत्वपूर्ण हो गई हैं। मानवीय मूल्यों और 'अतिथि देवो भव' की परंपरा का सम्मान करते हुए भी भारत अपनी सुरक्षा के प्रति सजग है तथा सीमावर्ती क्षेत्रों और सीमा पार की गतिविधियों पर लगातार नजर बनाए रखता है, ताकि राष्ट्रीय हितों और आंतरिक स्थिरता की रक्षा सुनिश्चित की जा सके।**




जून 2026 में मिजोरम के लॉन्गतलाई जिले में म्यांमार से होने वाले अवैध सीमा–पार व्यापार और कर चोरी पर अंकुश लगाने के लिए लाइ ऑटोनॉमस डिस्ट्रिक्ट काउंसिल (एलएडीसी) ने अतिरिक्त चेक गेट और पुलिस चौकियां स्थापित करने का निर्णय लिया। एलएडीसी के कराधान विभाग के कार्यकारी सदस्य एच.सी. लालथावमलियाना ने व्यापारियों से जीएसटी पंजीकरण कराने की अपील करते हुए कहा कि इससे फर्जी दस्तावेजों के इस्तेमाल, कर चोरी और अवैध व्यापार को नियंत्रित करने में मदद मिलेगी। वर्ष 2021 में म्यांमार में सैन्य तख्तापलट के बाद चिन और रखाइन राज्यों का देश के अन्य हिस्सों से संपर्क काफी हद तक बाधित हो गया था। इसके परिणामस्वरूप मिज़ोरम के लॉन्गतलाई और सियाहा जिले पश्चिमी म्यांमार तक वस्तुओं की आपूर्ति के प्रमुख मार्ग बनकर उभरे। हालांकि यह व्यापार लंबे समय से बड़े पैमाने पर अनौपचारिक और अवैध रूप से संचालित होता रहा है, लेकिन अब प्रशासन सीमा क्षेत्रों में निगरानी और नियंत्रण को मजबूत कर इस गतिविधि पर प्रभावी अंकुश लगाने की दिशा में कदम उठा रहा है।

जून 2026 में म्यांमार के चिन राज्य में सेना की बढ़ती सैन्य कार्रवाई के बीच हुआलंगोराम पीपुल ऑर्गनाइजेशन (एचपीओ) ने मिजोरम सीमा के निकट संभावित मानवीय संकट को लेकर सहायता की अपील की। संगठन के अनुसार, म्यांमार की सेना ने व्यापक अभियान चलाकर फालम, खामटाप और टोंजांग जैसे रणनीतिक क्षेत्रों पर पुनः नियंत्रण स्थापित कर लिया है तथा अब हाईमुआल, खावमावी और रिहखावदार जैसे सीमावर्ती इलाकों पर सैन्य कार्रवाई की आशंका बढ़ गई है। संभावित संघर्ष और बड़े पैमाने पर नागरिकों के विस्थापन को देखते हुए एचपीओ ने खाद्य सामग्री, दवाइयों और स्वास्थ्य सेवाओं सहित मानवीय सहायता की आवश्यकता जताई है। इस बीच, मिजोरम की सामाजिक संस्था जो रीयूनिफिकेशन ऑर्गनाइजेशन (जेडओआरओ) और राज्य सरकार ने प्रभावित लोगों को आवश्यक राहत एवं मानवीय सहायता उपलब्ध कराने का आश्वासन दिया है।

जुलाई 2026 में मिजोरम सरकार ने बांग्लादेश के चिटगांव हिल ट्रैक्ट्स (सीएचटी) से आए सभी 1,679 शरणार्थियों का बायोमैट्रिक पंजीकरण सफलतापूर्वक पूरा कर लिया। वहीं, म्यांमार से आए शरणार्थियों का पंजीकरण भी 98.88 प्रतिशत तक पूर्ण हो चुका है और केवल 330 लोगों का पंजीकरण शेष है। बांग्लादेशी शरणार्थी वर्ष 2022 में चिटगांव हिल ट्रैक्ट्स में सैन्य अभियान के बाद मिजोरम पहुंचे थे, जबकि म्यांमार के शरणार्थियों ने 2021 के सैन्य तख्तापलट के बाद उत्पन्न राजनीतिक अस्थिरता और सशस्त्र संघर्ष के कारण राज्य में शरण ली थी। केंद्रीय गृह मंत्रालय के निर्देश पर जुलाई 2025 में शुरू किया गया यह बायोमैट्रिक पंजीकरण अभियान अब अपने अंतिम चरण में पहुंच चुका है और इसके शीघ्र पूर्ण होने की संभावना है।

# माह के महत्वपूर्ण दिवस

संकलनकर्ता – डॉ. अपर्णा इड़ा श्री, सह प्राध्यापक, दीनदयाल उपाध्याय कॉजेल, दिल्ली विवि.

**22 जुलाई - राष्ट्रीय ध्वज दिवस :** भारतीय राष्ट्रीय ध्वज भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, स्वतंत्रता के लिए किए गए संघर्ष और एक एकजुट एवं समृद्ध राष्ट्र के लिए जनता की आकांक्षाओं का प्रतीक है। पिंगली वेंकैया द्वारा डिजाइन किए गए तिरंगे को भारत के ध्वज के रूप में अपनाने की वर्षगांठ के उपलक्ष्य में प्रतिवर्ष 22 जुलाई को राष्ट्रीय ध्वज दिवस मनाया जाता है।

**26 जुलाई - कारगिल विजय दिवस :** यह 1999 के उस ऐतिहासिक दिन की याद दिलाता है जब भारतीय सशस्त्र बलों ने ऑपरेशन विजय को सफलतापूर्वक पूरा किया, पाकिस्तानी घुसपैठियों को खदेड़ दिया और लद्दाख में कारगिल, द्रास और बटालिक की रणनीतिक पर्वतीय चोटियों को पुनः प्राप्त कर लिया। लगभग 60 दिनों तक चले कारगिल युद्ध का अंत 26 जुलाई को हुआ था। यह दिन कारगिल युद्ध के नायकों को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए मनाया जाता है।



**29 जुलाई - गुरु पूर्णिमा दिवस :** हिंदू माह आषाढ़ की पूर्णिमा के दिन पड़ने वाला यह पर्व भारत के सबसे सांस्कृतिक और आध्यात्मिक रूप से महत्वपूर्ण त्योहारों में से एक है, जो पूरी तरह से शिक्षकों, मार्गदर्शकों और आध्यात्मिक गुरुओं को समर्पित है। 'गुरु' नाम संस्कृत से लिया गया है, जहाँ 'गु' का अर्थ है अंधकार और 'रु' का अर्थ है अंधकार को दूर करने वाला। इस प्रकार, गुरु को अज्ञान के अंधकार को दूर करने वाले परम प्रकाश के रूप में पूजा जाता है। हिंदू परंपरा में, गुरु पूर्णिमा व्यास पूर्णिमा का पर्याय है। यह महर्षि वेद व्यास की जयंती का प्रतीक है, जिन्हें हिंदू सभ्यता की चेतना का आदि गुरु (प्राचीन, आदिम शिक्षक) माना जाता है। योगिक संस्कृति और परंपरा के अनुसार, गुरु पूर्णिमा मानवता के लिए एक गहन विकासवादी कदम का प्रतीक है। यह वह दिन है जब शिव आदियोगी (प्रथम योगी) बने और आदि गुरु (प्रथम शिक्षक) में रूपांतरित हुए। भारतीय संस्कृति में माता–पिता को व्यक्ति का प्रथम गुरु माना जाता है। परिवारों में यह एक सामान्य प्रथा है कि बच्चे अपने माता–पिता और शैक्षणिक शिक्षकों के साथ–साथ आध्यात्मिक गुरुओं का भी आशीर्वाद प्राप्त करते हैं।

**7 अगस्त :** राष्ट्रीय हथकरघा दिवस – यह प्रत्येक वर्ष 7 अगस्त को भारत की समृद्ध हथकरघा परंपरा और बुनकरों के योगदान को सम्मान देने के लिए मनाया जाता है। इसकी शुरुआत वर्ष 2015 में भारत सरकार ने की थी। यह तिथि 1905 के स्वदेशी आंदोलन की याद दिलाती है, जब विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार और स्वदेशी उत्पादों को अपनाने का आह्वान किया गया था। भारत के बनारसी, कांजीवरम, चंदेरी, पाटोला और पश्मीना जैसे हस्तनिर्मित वस्त्र विश्वभर में प्रसिद्ध हैं। यह दिवस स्थानीय बुनकरों को प्रोत्साहन देने, भारतीय वस्त्र संस्कृति को संरक्षित रखने तथा 'वोकल फॉर लोकलश और 'आत्मनिर्भर भारतश जैसे अभियानों को बढ़ावा देने का संदेश देता है।

**8 अगस्त : भारत छोड़ो आंदोलन दिवस** – 'भारत छोड़ो' नारा यूसुफ मेहरअली ने गढ़ा था, जो मुंबई के मेयर भी रह चुके थे। अपने प्रमुख नेताओं की अचानक गिरफ्तारी के बावजूद, यह आंदोलन पूरे देश में एक विशाल, स्वतःस्फूर्त जन विद्रोह में तब्दील हो गया। अरुणा आसफ अली (जिन्होंने गोवालिया टैंक मैदान में भारतीय ध्वज फहराया), राम मनोहर लोहिया और जयप्रकाश नारायण जैसे युवा नेताओं ने भूमिगत प्रतिरोध आंदोलनों का नेतृत्व किया। इसे द्वितीय विश्व युद्ध के बाद ब्रिटिश उपनिवेशवाद से मुक्ति को परम आवश्यक बनाने वाला निर्णायक मोड़ माना जाता है।

**12 अगस्त : अंतरराष्ट्रीय युवा दिवस -** अंतरराष्ट्रीय युवा दिवस प्रत्येक वर्ष 12 अगस्त को संयुक्त राष्ट्र के आह्वान पर मनाया जाता है। इसका उद्देश्य युवाओं की क्षमता, अधिकारों और समाज निर्माण में उनकी भूमिका के प्रति जागरूकता बढ़ाना है। भारत विश्व के सबसे युवा देशों में से एक है, इसलिए राष्ट्र के विकास में युवाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। शिक्षा, विज्ञान, खेल, नवाचार, उद्यमिता और सामाजिक सेवा जैसे क्षेत्रों में युवा नई उपलब्धियाँ हासिल कर रहे हैं। यह दिवस युवाओं को नेतृत्व, कौशल विकास, सामाजिक उत्तरदायित्व और राष्ट्र निर्माण के लिए प्रेरित करता है। साथ ही, रोजगार, शिक्षा, मानसिक स्वास्थ्य और सतत विकास जैसे मुद्दों पर गंभीरता से विचार करने का अवसर भी प्रदान करता है।

–डेस्क

# उत्तर भारत में मतांतरण और कथित 'लव जिहाद' से जुड़े मामलों पर कार्रवाई तेज

उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड में मतांतरण तथा कथित 'लव जिहाद' से जुड़े कई मामलों में पुलिस ने कार्रवाई की है। चंदौली के इटवा गांव में प्रार्थना सभा की आड़ में कथित रूप से प्रलोभन देकर मतांतरण कराने के आरोप में छह लोगों को गिरफ्तार किया गया। मौके से बाइबिल, धार्मिक साहित्य, ध्वनि उपकरण, एक कार और दो बाइक बरामद होने की जानकारी दी गई। बरेली के मीरगंज क्षेत्र में भी मतांतरण के लिए कथित प्रलोभन देने तथा हिंदू देवी–देवताओं पर आपत्तिजनक टिप्पणी करने के आरोप में प्राथमिकी दर्ज की गई।




बरेली में ही इंस्टाग्राम के माध्यम से हुई दोस्ती के बाद एक युवती ने युवक पर शादी का झांसा देकर शारीरिक शोषण, मतांतरण, गर्भपात कराने और विवाह से इनकार कर दिया, जिस पर मुकदमा दर्ज कर लिया है, और आगरा के फतेहपुर सीकरी में पहचान छिपाकर विवाह करने और बाद में मतांतरण का दबाव बनाने के आरोप में भी पुलिस ने मामला दर्ज किया है। मुरादाबाद में एक महिला ने बताया की मेरे साथ जबरन मतांतरण कराने और बंधक बनाया, जिसमें आरोपितों को गिरफ्तार किया गया। इन सभी मामलों में पुलिस जांच और विधिक कार्रवाई जारी है।

मतांतरण और कथित 'लव जिहाद' से जुड़े इन मामलों ने सामाजिक, धार्मिक और कानूनी स्तर पर गंभीर चिंताएँ उत्पन्न की हैं। समाज में जागरूकता, सामाजिक सौहार्द और संवैधानिक मूल्यों को सुदृढ़ करना भी उतना ही महत्वपूर्ण है, ताकि किसी भी प्रकार के प्रलोभन, दबाव या धोखे से जुड़े मामलों पर प्रभावी रोक लगाई जा सके।

# घर वापसी के मामलों पर बढ़ी सक्रियता



सहारनपुर के बहेड़ी गुर्जर गांव में सनातन धर्म अपनाने के बाद शहजाद से शंकर बने युवक का परिवार सहित भव्य स्वागत किया गया। ग्रामीणों ने ढोल–नगाड़ों, पुष्पवर्षा और माल्यार्पण कर उनका अभिनंदन किया। शंकर के साथ गुरु धर्माचार्य अरुण कृष्णजी महाराज और परिवार के सदस्य भी मौजूद रहे। जानकारी के अनुसार, 21 अप्रैल को हरिद्वार में शहजाद ने परिवार के साथ पवित्र गंगा में स्नान कर विधि–विधान से पूजा–अर्चना की और सनातन धर्म स्वीकार किया, जिसके बाद उनका नाम शंकर रखा गया। पहली बार अपने पैतृक गांव पहुंचने पर उन्होंने सबसे पहले स्थानीय मंदिर में पूजा–अर्चना की और गांव के बुजुर्गों का आशीर्वाद लिया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में ग्रामीण मौजूद रहे और उन्होंने शंकर एवं उनके परिवार का गर्मजोशी से स्वागत किया।

# छत्तीसगढ़ की अलीशा बनी अदिति

छत्तीसगढ़ के दुर्ग की रहने वाली अलीशा खातून ने सोशल मीडिया के माध्यम से रामपुर निवासी जोगेंद्र सिंह सैनी से हुई पहचान के बाद प्रेम विवाह कर लिया। दोनों की करीब डेढ़ वर्ष पहले फेसबुक और इंस्टाग्राम पर दोस्ती हुई, जो बाद में प्रेम संबंध में बदल गई। 10 मई को अलीशा रामपुर पहुंची, जिसके बाद परिजनों ने उसकी गुमशुदगी दर्ज कराई। छत्तीसगढ़ पुलिस उसे लेने रामपुर पहुंची, लेकिन जांच में युवती के बालिग होने और अपनी इच्छा से जोगेंद्र के साथ रहने की पुष्टि हुई। पुलिस ने उसके बयान दर्ज कर उसे प्रेमी के साथ रहने की अनुमति दे दी। बाद में दोनों ने हिंदू रीति–रिवाज से विवाह किया और युवती ने अपना नाम अदिति रख लिया।



–डेस्क

# योगी सरकार 7,720 लेखपालों को नियुक्ति पत्र 62 लाख से अधिक युवाओं को रोजगार से जोड़ चुकी है

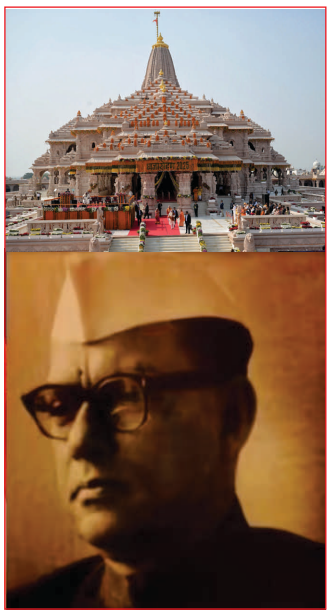


योगी आदित्यनाथ ने लखनऊ से 7,720 नवचयनित लेखपालों को नियुक्ति पत्र वितरण किया गया है, प्रदेश के युवाओं को बड़ी सौगात दी है जिससे युवाओं का विश्वास सरकार की सबसे बड़ी पूंजी है और भर्ती प्रक्रिया पूरी तरह निष्पक्ष, पारदर्शी तथा योग्यता आधारित रही, चयन से लेकर नियुक्ति पत्र वितरण और जिला आवंटन तक किसी भी अभ्यर्थी को सिफारिश की आवश्यकता नहीं पड़ी ऐसा लोगों का कहना है

मुख्यमंत्री बोले केंद्र और राज्य सरकार की विभिन्न रोजगार एवं स्वरोजगार योजनाओं के माध्यम से अब तक लगभग 62 लाख से अधिक युवाओं को रोजगार और आजीविका से जोड़ा जा चुका है और आगे यह भी कहा कि 4,700 नए पदों पर भर्ती के लिए अधियाचन भेजा जा चुका है और जल्द ही इन पदों पर भी नियुक्तियां की जाएंगी।

प्रदेश के विभिन्न जिलों में भी नियुक्ति पत्र वितरण कार्यक्रम आयोजित किए गए, मंत्रियों और जनप्रतिनिधियों ने चयनित अभ्यर्थियों को नियुक्ति पत्र सौंपे। यह पहल केवल सरकारी पदों को भरने तक सीमित नहीं है, बल्कि युवाओं में पारदर्शी भर्ती व्यवस्था के प्रति विश्वास मजबूत करने का भी महत्वपूर्ण प्रयास है, लेखपालों की यह नियुक्ति राजस्व व्यवस्था को अधिक प्रभावी बनाएगी और प्रदेश में सुशासन, पारदर्शिता तथा रोजगार सृजन की दिशा में सरकार की प्रतिबद्धता को और मजबूत करेगी।

# श्रीरामजन्मभूमि आंदोलन के रणनीतिकार दाऊ दयाल खन्ना के नाम पर मिली मुरादाबाद को नई पहचान



किसी स्थान का नाम केवल उसकी पहचान नहीं, बल्कि उसके इतिहास, संस्कृति और प्रेरणादायी व्यक्तित्वों का परिचय भी होता है। मुरादाबाद के वर्षों पुराने लाइनपार क्षेत्र का नाम बदलकर दाऊ दयाल खन्ना नगर किया जाना इसी भावना का प्रतीक है। यह निर्णय स्वतंत्रता सेनानी, पूर्व स्वास्थ्य मंत्री तथा श्रीरामजन्मभूमि आंदोलन के प्रमुख रणनीतिकार दाऊ दयाल खन्ना के योगदान को सम्मान देने के उद्देश्य से लिया गया है।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने घोषणा करते हुए कहा कि यह नामकरण दाऊ दयाल खन्ना के प्रति श्रद्धांजलि और कृतज्ञता का प्रतीक है। उन्होंने बताया कि 1984 में गठित श्रीरामजन्मभूमि मुक्ति यज्ञ समिति में महंत अवैद्यनाथ अध्यक्ष और दाऊ दयाल खन्ना महासचिव थे। आंदोलन को संगठित स्वरूप देने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही।

लगभग चार लाख आबादी, 60 से अधिक मोहल्लों और नगर निगम के आठ वार्डों वाले इस क्षेत्र को अब नई पहचान मिली है। इस परिवर्तन के पीछे क्षेत्रवासियों की जनभावना और नया नाम–नई पहचान अभियान की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

दाऊ दयाल खन्ना नगर केवल एक नया नाम नहीं, बल्कि राष्ट्रसेवा, सांस्कृतिक चेतना और श्रीरामजन्मभूमि आंदोलन से जुड़े एक प्रेरणादायी व्यक्तित्व के योगदान का सम्मान है। ऐसे निर्णय समाज को अपने इतिहास से जोड़ते हैं और नई पीढ़ी में राष्ट्रीय गौरव तथा सांस्कृतिक विरासत के प्रति सम्मान की भावना को सुदृढ़ करते हैं।

# मानसून की फुहार और बीमारियों की बौछार

नन्द किशोर शर्मा, पूर्व प्रवक्ता, दिल्ली शिक्षा विभाग

**हर वर्ष मानसून (वर्षा ऋतु) चिलचिलाती गर्मी और लू से राहत दिलाता है। बरसात का मौसम हरियाली, ठंडी हवा और बारिश का आनंद लेकर आता है, लेकिन साथ-साथ यह मौसम कई स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियों और कई बीमारियों के फैलने के लिए अनुकूल परिस्थितियों भी पैदा करता है। बढ़ती नमी, रुके हुए पानी, खराब जल निकासी व्यवस्था और अचानक मौसम परिवर्तन के कारण बैक्टीरिया, वायरस और मच्छर पनपने लगते हैं जिसके कारण इस मौसम में वायरल बुखार, मलेरिया, डेंगू, पेट के संक्रमण और फंगल संक्रमण का खतरा सबसे अधिक हो जाता है। मानसून के दौरान होने वाली बिमारियों, लक्षण और उनसे बचाव के उपाय :-**

**वायरल बुखार** : मानसून के दौरान मौसम में अचानक बदलाव के कारण वायरल बुखार बहुत आम बात है। इसके लक्षणों में माध्यम से तेज बुखार, गले में खराश, नाक बहना, सिर दर्द और बदन दर्द शामिल है। अधिकांश मामलों में वायरल बुखार आराम करने, ज्यादा से ज्यादा तरल पदार्थों के सेवन करने और तुलसी के पत्ते,काली मिर्च तथा गिलोय के काढ़े के नियमित सेवन से ही तीन से पांच दिन में ठीक हो जाता है।

**डेंगू :** डेंगू मानसून की सबसे खतरनाक बीमारियों में से एक है जो कि एडीज एजिप्टी मच्छर के कारण होती है। हालांकि डेंगू के केस बरसाती मौसम के अलावा भी देखने को मिलते हैं।इसके लक्षणों में तेज बुखार, गंभीर सिर दर्द, जोड़ों में दर्द, मांसपेशियों में दर्द और शरीर पर चकत्ते या हल्का रक्तस्राव शामिल है। अगर इसका समुचित उपचार न किया जाए तो अनेक गंभीर जटिलताएं पैदा हो सकती हैं। सावधानी ही इससे बचने का एकमात्र उपाय है। अपने आस-पास सफाई का ध्यान रखें, बर्तनों का पानी नियमित रूप से बदलें और मच्छर भगाने वाली दवा या मच्छरदानी का प्रयोग करें तथा बताए गए लक्षण दिखाई देने पर तुरंत चिकित्सक की परामर्श लें।




**मलेरिया :** मलेरिया एनोफिलीज मच्छर के काटने से होता है तथा मानसून में होने वाली एक आम बीमारी है। इसके लक्षणों में बार-बार बुखार आना, ठंड लगना, पसीना आना और सिर दर्द शामिल है। मलेरिया से बचाव के लिए मच्छरदानी का उपयोग करें, मच्छरों के प्रजनन रोकने के लिए अपने आस-पास के क्षेत्रों में पानी जमा न होने दे, पूरी आस्तीन के कपड़े पहनें।

**चिकनगुनिया :** चिकनगुनिया भी एडीज एजिप्टी मच्छर से फैलता है। इसके लक्षणों में अचानक बुखार, जोड़ों में तेज दर्द, चकत्ते और मांसपेशियों में दर्द होता है, हालांकि यह जानलेवा नहीं होता है। लेकिन जोड़ों का दर्द हफ्तों तक रह सकता है, जिससे दैनिक गतिविधियां प्रभावित हो सकती हैं चिकनगुनिया से बचाव के उपाय डेंगू की तरह ही हैं।

**टाइफाइड :** टाइफाइड एक जीवाणु संक्रमित रोग है, जो साल्मोनेला टाइफी से दूषित भोजन या पानी के सेवन से होता है। मानसून के दौरान अस्वच्छता और असुरक्षित पेयजल के कारण आम रूप से हो जाता है। इसके लक्षणों में लंबे समय तक तेज बुखार, कमजोरी, पेट दर्द, कब्ज या दस्त और भूख न लगना शामिल है। टाइफाइड से बचाव के लिए उबला हुआ या फिल्टर किया हुआ पानी पीना एवं आवश्यक साफ-सफाई का ध्यान रखना जरूरी है।

**हैजा :** हैजा विब्रियो कोलेरी नामक जीवाणु से दूषित भोजन या पानी के संपर्क में आने से फैलता है। इसके लक्षणों में गंभीर दस्त, उल्टी, डिहाईड्रेशन (निर्जलीकरण) और मांसपेशियों में ऐंठन शामिल है। हैजा से बचाव के लिए मानसून के दौरान हमेशा साफ पानी पिएं, फलों और सब्जियों को अच्छी तरह धोएं और कच्चा व स्ट्रीट फूड खाने से बचें तथा साफ सफाई का ध्यान रखें।

**इन्फ्लूएंजा (फ्लू) :** इन्फ्लूएंजा एक वायरल संकरण है, जो श्वसनतंत्र को प्रभावित करता है। यह संक्रमण बरसात के मौसम में निकट संपर्क और नमी (आद्रता) के कारण आसानी से फैलता है। इनफ्लुएंजा से बचाव के लिए नियमित अंतराल पर हाथ धोते रहें, पर्याप्त पानी पिएं और पौष्टिक आहार लें।

मानसून अर्थात बरसात के दौरान यदि कुछ सामान्य सावधानियां बरतते हैं जैसे - इस अवधि के दौरान केवल उबला हुआ या छना हुआ पानी पिएं, बरसात के मौसम में कच्चा या सड़क किनारे मिलने वाला खाना खाने से बचें, आस-पास के वातावरण को स्थिर जल से मुक्त रखें, मच्छर भगाने वाले उत्पादों और मच्छरदानी का प्रयोग करें, नियमित रूप से साबुन से हाथ धोएं, हमेशा अपने आस-पास साफ सफाई का ध्यान रखें और हमेशा ताजा पका हुआ और स्वच्छ भोजन ही लें। यदि इन सावधानियों को अपने जीवन में अपनाते हैं तो मानसून के दौरान होने वाली इन आम बीमारियों से आसानी से बचा जा सकता है।

संकलनकर्ता – डॉ. दीपा रानी (सहायक प्रोफेसर, दिल्ली विश्वविद्यालय)



**गुरु पूर्णिमा : ज्ञान, श्रद्धा और गुरु-शिष्य परंपरा का पावन उत्सव :** भारतीय ज्ञान परंपरा में गुरु का स्थान हमेशा से ही महत्वपूर्ण रहा है। सनातन परंपरा में गुरु को आत्मिक उन्नति का प्रतीक और जीवन का मार्गदर्शक माना गया है। प्रसिद्ध कवि कबीर दास जी अपने दोहे – "गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागूं पाय।
बलिहारी गुरु आपने, गोविंद दियो बताय।।"
को लिखते हुए कहते हैं, पहले गुरु को प्रणाम करना चाहिए, क्योंकि गुरु ने ही भगवान का मार्ग दिखाया है। यदि गुरु न होते, तो ईश्वर की पहचान और आत्मज्ञान भी संभव न होता। हमारे शास्त्र, उपनिषद् एवम् गीता उपदेश में भी गुरु का स्थान सबसे ऊपर बताया गया है। भारतीय संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता यह रही है कि यहां ज्ञान को केवल पुस्तकों तक सीमित नहीं माना गया, बल्कि उसे जीवन जीने की कला के रूप में विकसित किया गया। इसी कारण भारत में गुरु का स्थान ईश्वर के समान माना गया है। गुरु केवल शिक्षा देने वाला व्यक्ति नहीं, बल्कि वह मार्गदर्शक है जो मनुष्य को अज्ञान के अंधकार से निकालकर ज्ञान, विवेक और आत्मबोध के प्रकाश की ओर ले जाता है। यही कारण है कि भारतीय परंपरा में गुरु के प्रति श्रद्धा, कृतज्ञता और समर्पण व्यक्त करने के लिए आषाढ़ मास की पूर्णिमा को गुरु पूर्णिमा का पावन पर्व मनाया जाता है।

समकालीन शिक्षा पद्धति में विशेषकर आज के दौर में गुरु और शिष्य सम्बंध में वह जुड़ाव और आदर देखने को नहीं मिलता। हमे इस पर चिंतन और मंथन की जरूरत है। आज युवा करियर, प्रतिस्पर्धा और जीवन की अनिश्चितताओं से जूझ रहे हैं, इस परिस्थिति में उनकी सहायता और मार्गदर्शन के लिए एक योग्य गुरु का होना अधिक आवश्यक हो गया है। आज आवश्यकता है ऐसे गुरु की है जो केवल जानकारी न दें, बल्कि व्यक्तित्व का निर्माण भी करें ताकि शिष्य केवल परीक्षा उत्तीर्ण करने के लिए नहीं पढ़े बल्कि खुद के जीवन को सार्थक बनाये और राष्ट्र निर्माण में अहम योगदान दे ।

– निक्की वर्मा, काशी हिंदू विश्वविद्यालय

---

**गुरु परंपरा : विकसित भारत की सबसे मजबूत आधारशिला -** भारत की सभ्यता यदि आज भी विश्व के सामने सिर उठाकर खड़ी है, तो उसके पीछे किसी राजा, किसी साम्राज्य या किसी सत्ता का हाथ नहीं, बल्कि गुरु परंपरा की शक्ति है। दुनिया के अधिकांश देशों ने ज्ञान को पुस्तकों तक सीमित किया, लेकिन भारत ने ज्ञान को व्यक्ति के रूप में प्रतिष्ठित किया और उसे "गुरु" कहा।

हम सभी के लिए गुरु पूर्णिमा केवल एक धार्मिक उत्सव नहीं है, यह उस सनातन चेतना का महापर्व है जिसने भारत को विश्वगुरु के पद पर प्रतिष्ठित किया और जो भविष्य में भी भारत को पुनः विश्वगुरु बनाने की सामर्थ्य रखती है। यह पर्व हमें स्मरण कराता है कि किसी राष्ट्र की वास्तविक शक्ति उसके शस्त्र, संपदा या सत्ता में नहीं, बल्कि उसकी गुरु–शिष्य परंपरा, ज्ञान और संस्कारों में निहित होती है।

आज का युग सूचना का है, लेकिन सूचना और ज्ञान में उतना ही अंतर है जितना प्रकाश और दिशा में। मोबाइल हमें जानकारी दे सकता है, इंटरनेट हमें तथ्य दे सकता है, लेकिन सही और गलत के बीच चयन करने की बुद्धि केवल गुरु ही दे सकता है। इसीलिए भारतीय संस्कृति में कहा गया है।

"गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु गुरु देवो महेश्वरः।"

गुरु केवल पढ़ाने वाला व्यक्ति नहीं होता; गुरु वह है जो व्यक्ति के भीतर छिपी संभावनाओं को पहचानता है और उसे उसकी वास्तविक क्षमता तक पहुँचाता है। चाणक्य ने यदि चंद्रगुप्त को न गढ़ा होता, तो शायद इतिहास में मौर्य साम्राज्य का अस्तित्व ही नहीं होता। समर्थ गुरु रामदास न होते, तो छत्रपति शिवाजी केवल एक वीर योद्धा बनकर रह जाते, राष्ट्र–निर्माता नहीं।



आज समाज एक विचित्र संकट से गुजर रहा है। हमारे पास तकनीक है, संसाधन हैं, अवसर हैं, लेकिन दिशा का अभाव है। युवाओं के हाथ में स्मार्टफोन है, लेकिन जीवन का उद्देश्य स्पष्ट नहीं है। ऐसे समय में गुरु की भूमिका पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। आज के भारत को केवल इंजीनियर, डॉक्टर और अधिकारी नहीं चाहिए; भारत को ऐसे गुरु चाहिए जो युवाओं में चरित्र, राष्ट्रभावना, संवेदनशीलता और नेतृत्व क्षमता का निर्माण कर सकें। क्योंकि किसी भी राष्ट्र का भविष्य उसकी इमारतों से नहीं, बल्कि उसकी पीढ़ियों से तय होता है।

भारत की नई पीढ़ी यदि विकसित भारत 2047 का सपना साकार करना चाहती है, तो उसे आधुनिक तकनीक के साथ–साथ गुरु परंपरा की आत्मा को भी अपनाना होगा। क्योंकि मशीनें दक्ष कर्मचारी बना सकती हैं, लेकिन महान राष्ट्र–निर्माण के लिए चरित्रवान नागरिकों की आवश्यकता होती है, और चरित्र का निर्माण केवल गुरु ही कर सकता है।

–किशन कुमार साहू , फकीर मोहन विश्वविद्यालय

संकलनकर्ता – डॉ. नीलम कुमारी

# नए उत्तर प्रदेश की नई शिक्षा दृष्टि
## नवाचार, विज्ञान और वैश्विक अवसरों की ओर बढ़ते कदम




'सा विद्या या विमुक्तये' – अर्थात् वह शिक्षा ही वास्तविक शिक्षा है जो मनुष्य को अज्ञान, सीमाओं और संकीर्णताओं से मुक्त कर उसे जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा दे। उत्तर प्रदेश आज इसी शिक्षा दर्शन को आत्मसात करते हुए नई शिक्षा दृष्टि के साथ ज्ञान, विज्ञान और नवाचार के क्षेत्र में देश के लिए एक अनुकरणीय मॉडल के रूप में उभर रहा है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में प्रदेश की शिक्षा व्यवस्था केवल पाठ्यपुस्तकों तक सीमित नहीं रह गई है, बल्कि विद्यार्थियों को वैश्विक मंच पर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करने के अवसर प्रदान कर रही है।

'नए उत्तर प्रदेश की नई शिक्षा दृष्टि' का उद्देश्य विद्यार्थियों में वैज्ञानिक सोच, पर्यावरणीय चेतना, नवाचार की भावना और वैश्विक दृष्टिकोण का विकास करना है। इसी दिशा में प्रदेश सरकार ने विद्यार्थियों को अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं से जोड़ने की अभिनव पहल की है। 'वाइल्ड विजडम ग्लोबल चैलेंज–2026' जैसे प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय मंच पर प्रतिभागिता के माध्यम से विद्यार्थियों को विश्वस्तरीय प्रतिस्पर्धा, वैज्ञानिक चिंतन और पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक बनाया जा रहा है।

इस वर्ष प्रतियोगिता की थीम 'फ्रॉम द कोस्टलाइन टू द सी फ्लोर : एन ओशन ओडिसी' निर्धारित की गई है, जो समुद्री जैव विविधता और पर्यावरण संरक्षण के प्रति विद्यार्थियों को संवेदनशील बनाने का महत्वपूर्ण प्रयास है। यह पहल राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 की उस भावना को भी साकार करती है, जिसमें अनुभवात्मक शिक्षा, समग्र विकास और वैश्विक नागरिकता पर विशेष बल दिया गया है।

विशेष रूप से कक्षा 6 से 9 तक के विद्यार्थियों के लिए यह अवसर अत्यंत महत्वपूर्ण है। परिषदीय विद्यालयों, कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालयों (KGBVs), अशासकीय सहायता प्राप्त तथा मान्यता प्राप्त विद्यालयों के विद्यार्थियों को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने का अवसर प्रदान करना शिक्षा के लोकतंत्रीकरण की दिशा में एक सराहनीय कदम है। इससे यह स्पष्ट होता है कि उत्तर प्रदेश की शिक्षा नीति अवसरों की समानता और समावेशी शिक्षा के सिद्धांत पर आधारित है।

प्रदेश सरकार द्वारा विद्यार्थियों के लिए ई–लर्निंग सामग्री, ऑनलाइन मॉड्यूल तथा विषय विशेषज्ञों के मार्गदर्शन की व्यवस्था करना शिक्षा में तकनीक के प्रभावी उपयोग का उत्कृष्ट उदाहरण है। यह पहल विद्यार्थियों को डिजिटल रूप से सशक्त बनाने के साथ–साथ उन्हें भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार करने का कार्य भी कर रही है। शिक्षा अब केवल परीक्षा में अंक प्राप्त करने का माध्यम नहीं, बल्कि जीवन कौशल, नवाचार और नेतृत्व क्षमता विकसित करने का सशक्त साधन बन रही है।

विद्यालय, राज्य, जोनल, राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आयोजित होने वाली प्रतियोगिताओं की बहुस्तरीय व्यवस्था विद्यार्थियों में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा, आत्मविश्वास और उत्कृष्टता प्राप्त करने की प्रेरणा प्रदान करती है। राष्ट्रीय स्तर की विजेता टीम का अंतरराष्ट्रीय मंच पर भारत का प्रतिनिधित्व करना न केवल विद्यार्थियों के लिए गौरव का विषय है, बल्कि यह उत्तर प्रदेश की शैक्षिक उपलब्धियों का भी वैश्विक परिचय है।

निस्संदेह, उत्तर प्रदेश शिक्षा के क्षेत्र में एक नए युग का सूत्रपात कर रहा है। यहां की नई शिक्षा दृष्टि विद्यार्थियों को केवल रोजगार योग्य नहीं, बल्कि जिम्मेदार, संवेदनशील और वैश्विक नागरिक बनाने का संकल्प लेकर आगे बढ़ रही है। यह परिवर्तन आने वाले भारत की उस तस्वीर को साकार कर रहा है, जहां शिक्षा नवाचार का आधार होगी और विद्यार्थी राष्ट्र निर्माण के सशक्त वाहक बनेंगे।

नया उत्तर प्रदेश आज यह संदेश दे रहा है कि जब शिक्षा अवसरों से जुड़ती है, तो प्रतिभा सीमाओं को पार कर विश्व मंच पर अपना परचम अवश्य लहराती है।

# गोस्वामी तुलसीदास जी : जीवन परिचय, कृतित्व और योगदान



गोस्वामी तुलसीदास जी हिंदी साहित्य के महान संत–कवि, दार्शनिक और रामभक्ति परंपरा के प्रमुख आचार्य थे। उनका जन्म श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की सप्तमी तिथि को 1532 ई. में उत्तर प्रदेश के चित्रकूट जनपद स्थित राजापुर में हुआ। बचपन में माता–पिता का निधन हो जाने के बाद उनका पालन–पोषण संत नरहरिदास ने किया, जिन्होंने उन्हें वेद, पुराण, संस्कृत और रामकथा का ज्ञान दिया। पत्नी रत्नावली के प्रेरक वचनों से प्रभावित होकर उन्होंने गृहस्थ जीवन त्याग दिया और स्वयं को श्रीराम की भक्ति तथा लोककल्याण के लिए समर्पित कर दिया।

तुलसीदास जी की सबसे प्रसिद्ध कृति 'श्रीरामचरितमानस' है उन्होंने संस्कृत के स्थान पर अवधी और ब्रज जैसी लोकभाषाओं को अपनी रचनाओं का माध्यम बनाया। यह निर्णय उस समय अत्यंत महत्त्वपूर्ण था, क्योंकि इससे धार्मिक और आध्यात्मिक ज्ञान केवल विद्वानों तक सीमित न रहकर सामान्य जनता तक पहुँचा। इसी कारण उन्हें भारतीय जनमानस का कवि भी कहा जाता है।

इसके अतिरिक्त विनय पत्रिका, कवितावली, गीतावली, दोहावली और हनुमान बाहुक जैसी अनेक अमूल्य रचनाएँ भी उनकी साहित्यिक धरोहर हैं। उनका प्रसिद्ध संदेश 'परहित सरिस धरम नहिं भाई' आज भी मानवता का मार्गदर्शन करता है।

# राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त

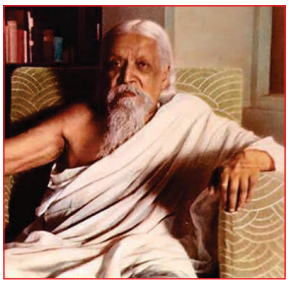


राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त आधुनिक हिंदी साहित्य के प्रमुख कवि तथा खड़ी बोली हिंदी काव्य के सशक्त प्रवर्तकों में से एक थे। उनका जन्म 3 अगस्त 1886 को उत्तर प्रदेश के झाँसी जनपद के चिरगाँव में सेठ रामचरण गुप्त और काशीबाई के यहाँ हुआ। उनके पिता साहित्यप्रेमी थे, जिसके कारण उन्हें बचपन से ही साहित्यिक एवं सांस्कृतिक वातावरण प्राप्त हुआ।

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के मार्गदर्शन में उनकी साहित्यिक प्रतिभा का विकास हुआ। उनकी प्रसिद्ध कृति 'भारत–भारती' ने राष्ट्रीय चेतना, स्वाधीनता और देशभक्ति की भावना को जन–जन तक पहुँचाया तथा स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान लोगों को प्रेरित किया। इसके अतिरिक्त 'साकेत', 'यशोधरा', 'पंचवटी', 'जयद्रथ–वध' और 'विष्णुप्रिया' जैसी कृतियाँ हिंदी साहित्य की अमूल्य धरोहर मानी जाती हैं। उनकी रचनाओं में राष्ट्रप्रेम, भारतीय संस्कृति, सामाजिक सुधार, नारी गरिमा, मानवता और नैतिक मूल्यों का अत्यंत प्रभावशाली चित्रण मिलता है।

स्वतंत्र भारत में उन्हें राज्यसभा का मनोनीत सदस्य बनाया गया। हिंदी साहित्य और राष्ट्रसेवा में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए वे 'राष्ट्रकवि' के रूप में विख्यात हुए। उनकी प्रसिद्ध पंक्ति 'हम कौन थे, क्या हो गए हैं और क्या होंगे अभी' आज भी आत्मचिंतन, राष्ट्रीय चेतना और सांस्कृतिक गौरव की प्रेरणा देती है।

# श्री अरबिंदो (अरविन्द घोष)



श्री अरबिंदो (अरविन्द घोष) आधुनिक भारत के महान राष्ट्रवादी, दार्शनिक, योगी, कवि और आध्यात्मिक चिंतक थे। उनका जन्म 15 अगस्त 1872 को कलकत्ता (वर्तमान कोलकाता) में डॉ. कृष्णधन घोष और स्वर्णलता देवी के यहाँ हुआ। सात वर्ष की आयु में वे शिक्षा के लिए इंग्लैंड भेजे गए, जहाँ उन्होंने सेंट पॉल्स स्कूल, लंदन तथा किंग्स कॉलेज, कैम्ब्रिज में अध्ययन किया। भारतीय सिविल सेवा (आईसीएस) की परीक्षा उत्तीर्ण की।

भारत लौटने के बाद उन्होंने बड़ौदा राज्य में प्रशासनिक एवं शैक्षणिक कार्य किया। इसके पश्चात वे भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के प्रमुख राष्ट्रवादी नेताओं में शामिल हुए। उन्होंने स्वदेशी आंदोलन को वैचारिक शक्ति प्रदान की और 'वंदे मातरम्' जैसे राष्ट्रवादी समाचार पत्र के माध्यम से जनजागरण किया। 1910 में वे पांडिचेरी (वर्तमान पुडुचेरी) चले गए, जहाँ उन्होंने आध्यात्मिक साधना, लेखन और समग्र योग (इंटीग्रल योग) के दर्शन का विकास किया।

उनकी प्रमुख कृतियों में द लाइफ डिवाइन, द सिंथेसिस ऑफ योग, एसेज ऑन द गीता तथा महाकाव्य सावित्री विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं। इन रचनाओं में मानव चेतना, आध्यात्मिक विकास और जीवन के उच्च आदर्शों का गहन विवेचन मिलता है।

# मैडम भीकाजी कामा

–डेस्क



मैडम भीकाजी कामा भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की अग्रणी क्रांतिकारी, समाजसेविका और प्रखर राष्ट्रवादी थीं। उनका जन्म 24 सितंबर 1861 को तत्कालीन बंबई (वर्तमान मुंबई, महाराष्ट्र) में एक समृद्ध पारसी परिवार में हुआ। उनके पिता सोराबजी फ्रामजी पटेल प्रतिष्ठित व्यापारी एवं समाजसेवी थे। उन्होंने प्रारंभिक शिक्षा मुंबई में प्राप्त की। विवाह के बाद भी उन्होंने देशसेवा को अपना सर्वोच्च उद्देश्य बनाया और ब्रिटिश शासन के विरुद्ध भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का सक्रिय समर्थन किया।

स्वास्थ्य लाभ के लिए वे इंग्लैंड गईं, जहाँ उनकी भेंट दादाभाई नैरोजी, श्यामजी कृष्ण वर्मा और अन्य राष्ट्रवादी नेताओं से हुई। बाद में वे फ्रांस में रहकर भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर जनमत तैयार करने में जुट गईं। वर्ष 1907 में जर्मनी के स्टुटगार्ट में आयोजित अंतरराष्ट्रीय समाजवादी सम्मेलन में उन्होंने भारत का ध्वज फहराकर भारतीय स्वतंत्रता की मांग को विश्व मंच पर प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया। यह घटना भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास में अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है।

मैडम भीकाजी कामा ने विदेशों में रहकर लेखन, भाषणों और क्रांतिकारी गतिविधियों के माध्यम से भारत की स्वतंत्रता के पक्ष में व्यापक जनजागरण किया। लंबे निर्वासन के बाद वे 1935 में भारत लौटीं। 13 अगस्त 1936 को मुंबई में उनका निधन हुआ। उनका जीवन साहस, राष्ट्रभक्ति, त्याग और महिला सशक्तिकरण का प्रेरणादायी उदाहरण है तथा भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में उनका योगदान सदैव स्मरणीय रहेगा।

# वीरांगना रानी अवंतीबाई लोधी

वीरांगना रानी अवंतीबाई लोधी 1857 के प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की महान सेनानायिका और अदम्य साहस की प्रतीक थीं। उनका जन्म 16 अगस्त 1831 को मध्य प्रदेश के सिवनी जिले के मनकेहनी गाँव में एक लोधी राजपूत परिवार में हुआ। उनके पिता राव जुझार सिंह एक प्रतिष्ठित जागीरदार थे। उनका विवाह रामगढ़ रियासत (वर्तमान डिंडोरी, मध्य प्रदेश) के राजा विक्रमादित्य सिंह लोधी से हुआ। पति के अस्वस्थ होने के बाद उन्होंने राज्य का प्रशासन संभाला और अपने अल्पवयस्क पुत्रों के संरक्षक के रूप में शासन का दायित्व निभाया।



1857 की क्रांति के दौरान अंग्रेजों ने 'कोर्ट ऑफ वार्ड्स' के माध्यम से रामगढ़ रियासत पर अधिकार करने का प्रयास किया, जिसका रानी ने दृढ़तापूर्वक विरोध किया। उन्होंने आसपास के राजाओं, जमींदारों और जनता को संगठित कर अंग्रेजी सेना के विरुद्ध संघर्ष का नेतृत्व किया तथा अपने साहस और रणकौशल से अंग्रेजों को कड़ी चुनौती दी। अंततः 20 मार्च 1858 को देवहारगढ़ के युद्ध में शत्रु के हाथों बंदी बनने के बजाय उन्होंने आत्मबलिदान देकर वीरता और स्वाभिमान का अमर उदाहरण प्रस्तुत किया।

रानी अवंतीबाई लोधी भारतीय इतिहास में नारी शक्ति, राष्ट्रभक्ति और आत्मसम्मान की प्रेरक प्रतीक हैं। भारत सरकार ने उनके सम्मान में डाक टिकट जारी किया तथा अनेक स्मारकों और संस्थानों के माध्यम से उनकी स्मृति को सम्मानित किया है।

# चीन की धरती पर गूंजा भारत का जयघोष श्रावणी की उड़ान बनी तिरंगे की शान

संकलनकर्ता– कुमारी श्रेयांशी, शोधार्थी

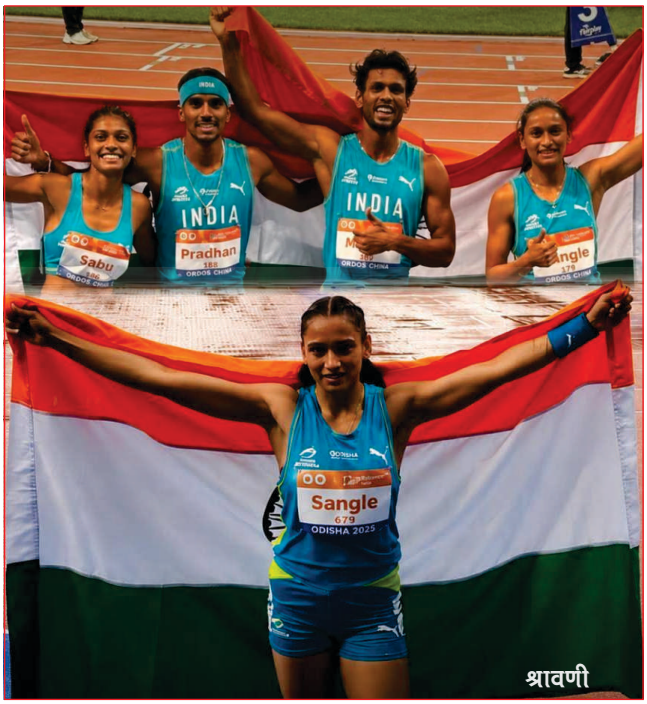
'जहां चाह, वहां राह' – यह कहावत चीन के ओरडोस शहर में आयोजित एशियाई अंडर–23 एथलेटिक्स चैंपियनशिप की मिक्स्ड 4×400 मीटर रिले स्पर्धा में भारतीय टीम ने चरितार्थ कर दिखाया। यह केवल एक स्वर्ण पदक की जीत नहीं थी, बल्कि भारतीय खिलाड़ियों के अदम्य साहस, दृढ़ संकल्प और अंतिम क्षण तक संघर्ष करने की अद्भुत मिसाल थी। जब जीत लगभग हाथ से निकलती दिखाई दे रही थी, तब भारतीय धाविका श्रावणी सचिन सांगले ने अपनी असाधारण गति और जुझारू खेल भावना से इतिहास रच दिया।

ओरडोस के ट्रैक पर हजारों दर्शकों की मौजूदगी में आयोजित इस रोमांचक फाइनल मुकाबले में मेजबान चीन को स्वर्ण पदक का सबसे प्रबल दावेदार माना जा रहा था। भारत की ओर से पहली लेग में आस्तिक प्रधान ने शानदार शुरुआत करते हुए टीम को मजबूत स्थिति में पहुंचाया। दूसरी लेग में सैंड्रा मोल साबू ने अपनी जिम्मेदारी बखूबी निभाई और तीसरी लेग में सेटू मिश्रा ने पूरी ताकत के साथ दौड़ लगाई। हालांकि, तेज गति से दौड़ रही चीन और फिलीपींस की टीमों के सामने भारत कुछ पीछे हो गया।

अंतिम 400 मीटर की दौड़ में जब बैटन श्रावणी सचिन सांगले के हाथों में पहुंची, तब भारत स्वर्ण पदक की दौड़ में काफी पीछे दिखाई दे रहा था। चीन की धाविका लगभग 10 मीटर की बढ़त बना चुकी थी। स्टेडियम में मौजूद अधिकांश लोगों को लग रहा था कि अब गोल्ड चीन के खाते में ही जाएगा। लेकिन भारतीय खिलाड़ियों की पहचान ही यही है कि वे अंतिम सांस तक संघर्ष करना जानते हैं।

श्रावणी ने धैर्य और आत्मविश्वास के साथ अपनी दौड़ शुरू की। पहले 100 मीटर में उन्होंने अपनी गति को नियंत्रित रखा और फिर धीरे–धीरे प्रतिद्वंद्वियों के बीच का अंतर कम करना शुरू किया। जैसे–जैसे फिनिश लाइन नजदीक आती गई, उनकी रफ्तार तूफ़ान बनती चली गई। अंतिम 150 मीटर में उन्होंने चीन की धाविका को चुनौती देना शुरू कर दिया और अंतिम 100 मीटर में दोनों लगभग बराबरी पर दौड़ रही थीं।

फिर आया वह ऐतिहासिक क्षण आखिरी 50 मीटर। श्रावणी ने अपने शरीर की बची हुई हर ऊर्जा को ट्रैक पर झोंक दिया और




फिनिश लाइन से ठीक पहले बेहतरीन लंज लगाकर जीत को भारत की झोली में डाल दिया। परिणाम आया भारत ने 3 मिनट 18.64 सेकंड के समय के साथ स्वर्ण पदक जीता, जबकि चीन 3 मिनट 18.74 सेकंड के समय के साथ दूसरे स्थान पर रहा। मात्र 0.10 सेकंड के अंतर ने भारत को स्वर्णिम गौरव दिलाया।

यह विजय केवल एक खेल उपलब्धि नहीं है, बल्कि यह संदेश है कि यदि संकल्प अटूट हो, तो अंतिम क्षण तक उम्मीद कभी समाप्त नहीं होती। भारतीय खिलाड़ियों ने एक बार फिर सिद्ध कर दिया कि असंभव शब्द केवल तब तक अस्तित्व में रहता है, जब तक कोई उसे संभव बनाने का साहस नहीं करता।

चीन की धरती पर जब तिरंगा सबसे ऊँचा लहराया और राष्ट्रगान की स्वर लहरियां गूँजीं, तब पूरे देश का हृदय गर्व से भर उठा। श्रावणी सचिन सांगले और उनकी टीम की यह स्वर्णिम दौड़ आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनी रहेगी। यह जीत हमें सिखाती है कि मंजिल उन्हीं को मिलती है, जो आखिरी कदम तक हार मानने से इनकार करते हैं।

# विश्व पटल पर भारत का विजय घोष राष्ट्रमंडल के रणबांकुरों ने बढ़ाया देश का मान

**वर्तमान में राष्ट्रमंडल खेल 2026 (ग्लास्गो) में भारत के लिए पदक जीतने वाले खिलाड़ियों ने अपने अद्भुत प्रदर्शन से देश को गौरवान्वित किया है। ये पदक केवल धातु नही बल्कि भारत के सामर्थ्य, संघर्ष और संकल्प के प्रतीक है।**

**स्क्वैश की नई सनसनी : अनाहत सिंह** - भारतीय स्क्वैश की स्वर्णिम उम्मीद, 18 वर्षीय अनाहत सिंह ने अपने अद्भुत खेल कौशल से विश्व पटल पर भारत का परचम लहराया है। वर्ष 2026 में उन्होंने इतिहास रचते हुए विश्व जूनियर स्क्वैश चैम्पियनशिप का खिताब जीतने वाली पहली भारतीय खिलाड़ी बनने का गौरव प्राप्त किया। इससे पूर्व राष्ट्रमंडल खेलों में सबसे कम उम्र की भारतीय खिलाड़ियों में शामिल होकर उन्होंने अपनी प्रतिभा का परिचय दिया था। उनकी फुर्ती, आत्मविश्वास और जीत का जज्बा भारतीय खेल जगत के लिए नई प्रेरणा है। अनाहत यह संदेश देती हैं कि यदि सपनों में दृढ़ विश्वास और निरंतर परिश्रम हो, तो विश्व की कोई भी ऊँचाई असंभव नहीं रहती। भारत को अपनी इस युवा प्रतिभा पर गर्व है।

**झंडू कुमार (कांस्य पदक, पैरा पावरलिफ्टिंग)** - झंडू कुमार की सफलता संघर्ष, संकल्प और समर्पण की प्रेरक गाथा है। कभी आर्थिक कठिनाइयों से जूझते हुए ई-रिक्शा चलाने वाले इस खिलाड़ी ने राष्ट्रमंडल खेलों में कांस्य पदक जीतकर सिद्ध कर दिया कि सपनों की उड़ान परिस्थितियों की मोहताज नहीं होती। जिस नाम को कभी उपहास का विषय बनाया गया, आज वही नाम करोड़ों भारतीयों के लिए गौरव का प्रतीक बन गया है। उनका यह पदक केवल व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं, बल्कि उन असंख्य युवाओं के लिए प्रेरणा है जो कठिन परिस्थितियों में भी अपने लक्ष्य के प्रति अडिग रहते हैं। भारत को आप पर गर्व है।

**चानाम्बम ऋषिकांत सिंह (रजत पदक, भारोत्तोलन)** - मणिपुर के सपूत चानाम्बम ऋषिकांत सिंह ने राष्ट्रमंडल खेलों के पुरुष 60 किलोग्राम भार वर्ग में रजत पदक जीतकर भारत का मान बढ़ाया है। उन्होंने स्नैच स्पर्धा में नया खेल रिकॉर्ड स्थापित कर अपनी असाधारण प्रतिभा का परिचय




दिया। उनका प्रदर्शन भारतीय भारोत्तोलन की समृद्ध परंपरा और खिलाड़ियों के अथक परिश्रम का सशक्त प्रमाण है। ऋषिकांत ने यह संदेश दिया है कि अनुशासन, दृढ़ इच्छाशक्ति और निरंतर अभ्यास से विश्व मंच पर सफलता प्राप्त की जा सकती है। उनका यह रजत पदक आने वाली पीढ़ियों के खिलाड़ियों के लिए प्रेरणा का दीप बनेगा।

**मीराबाई चानू (स्वर्ण पदक, भारोत्तोलन)** - भारत की स्वर्णिम बेटी मीराबाई चानू ने एक बार फिर राष्ट्रमंडल खेलों में स्वर्णिम इतिहास रच दिया। उन्होंने महिलाओं की 48 किलोग्राम स्पर्धा में स्वर्ण पदक जीतने के साथ-साथ नए खेल और राष्ट्रमंडल रिकॉर्ड स्थापित कर विश्व को अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया। विनम्रता, अनुशासन और अथक परिश्रम की प्रतिमूर्ति मीराबाई ने करोड़ों भारतीयों को गौरवान्वित किया है। उनका जीवन संघर्ष से शिखर तक की ऐसी प्रेरक यात्रा है, जो युवाओं को बड़े सपने देखने और उन्हें साकार करने का साहस प्रदान करती है। मीराबाई केवल एक खिलाड़ी नहीं, बल्कि नए भारत के अदम्य आत्मविश्वास की पहचान हैं।

# बागेश्वर के भूपेंद्र जोशी की अनूठी पहल

–डेस्क



उत्तराखंड के बागेश्वर जिले में थोक सब्जी विक्रेता भूपेंद्र बबलू जोशी ने स्वच्छता और पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए प्रेरणादायक अभियान शुरू किया है। उन्होंने घोषणा की है कि जो भी व्यक्ति नीलेश्वर मंदिर और आसपास के पार्क क्षेत्र से प्लास्टिक कचरा एकत्र कर लाएगा, उसे 10 रुपये नकद या मुफ्त सब्जी दी जाएगी, इस पहल को स्थानीय लोगों और पर्यटकों का अच्छा समर्थन मिल रहा है। भूपेंद्र जोशी का कहना है कि छोटे–छोटे प्रोत्साहन लोगों को स्वच्छता के प्रति जागरूक बना सकते हैं और इसे जन–आंदोलन का रूप दे सकते हैं। अभियान का उद्देश्य केवल कचरा हटाना नहीं, बल्कि पर्यावरण संरक्षण के प्रति सामाजिक जिम्मेदारी की भावना विकसित करना है। पहाड़ी क्षेत्रों में बढ़ते प्लास्टिक प्रदूषण के बीच यह पहल स्वच्छ भारत अभियान, जनभागीदारी और पर्यावरण संरक्षण का प्रेरक उदाहरण बनकर उभरी है तथा बच्चों और युवाओं में भी स्वच्छता के प्रति सकारात्मक संदेश पहुंचा रही है।

# हरिद्वार में शुरू हुआ पहला हिलांस रिटेल आउटलेट



उत्तराखंड के हरिद्वार में प्रदेश का पहला हिलांस रिटेल आउटलेट शुरू किया गया है। यह पहल ग्रामोत्थान (रीप) परियोजना और इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड (आईओसीएल) के सहयोग से शुरू हुई है। इसका उद्देश्य स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी हजारों ग्रामीण महिलाओं को अपने उत्पादों की बिक्री के लिए स्थायी बाजार उपलब्ध कराना है। आउटलेट पर उत्तराखंड के स्थानीय खाद्य उत्पाद, जैविक सामग्री, हस्तशिल्प, मिलेट आधारित उत्पाद, पारंपरिक दालें, मसाले, जड़ी–बूटियां और डेयरी उत्पाद उपलब्ध होंगे, यह पहल वोकल फॉर लोकल, आत्मनिर्भर भारत और लखपति दीदी अभियान को मजबूती देगी तथा ग्रामीण महिलाओं की आय बढ़ाने में सहायक होगी। जिला परियोजना प्रबंधक सोनम गुप्ता के अनुसार भविष्य में प्रदेश के अन्य आईओसीएल पेट्रोल पंपों पर भी ऐसे आउटलेट खोले जाएंगे, इससे हरिद्वार, ऋषिकेश और देहरादून आने वाले पर्यटक स्थानीय उत्पाद आसानी से खरीद सकेंगे, जिससे महिला उद्यमिता और स्थानीय अर्थव्यवस्था को नई गति मिलेगी।

# मेरठ का मटका मार्केट बना लोगों की पहली पसंद



मेरठ का स्ट्रीट मटका मार्केट इन दिनों बढ़ती गर्मी के बीच लोगों की पहली पसंद बन गया है, स्वास्थ्य के प्रति बढ़ती जागरूकता और पर्यावरण–अनुकूल जीवनशैली के कारण मिट्टी के मटके, सुराही, बोतलें और अन्य पारंपरिक बर्तनों की मांग तेजी से बढ़ी है। इस बाजार में प्रजापति समाज के कारीगरों द्वारा बनाए गए मटके, तवा, कढ़ाई, कुकर, कुल्हड़, कप, गिलास और सजावटी वस्तुएं किफायती कीमतों पर उपलब्ध हैं। दुकानदार दीपक कुमार के अनुसार मिट्टी के बर्तनों में रखा पानी प्राकृतिक रूप से लंबे समय तक ठंडा रहता है और इनमें बना भोजन स्वादिष्ट व स्वास्थ्यवर्धक माना जाता है, बाजार की खास बात यह है कि यहां मेरठ के साथ गुजरात, पश्चिम बंगाल और महाराष्ट्र के मिट्टी के उत्पाद भी मिलते हैं। दस से अधिक दुकानों वाला यह बाजार पारंपरिक कुम्हार कला, स्थानीय हस्तशिल्प और पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देने के साथ लोगों को प्राकृतिक और स्वास्थ्यवर्धक विकल्प उपलब्ध करा रहा है।

# राष्ट्र सर्वोपरि की अवधारणा का सशक्त प्रतिपादन

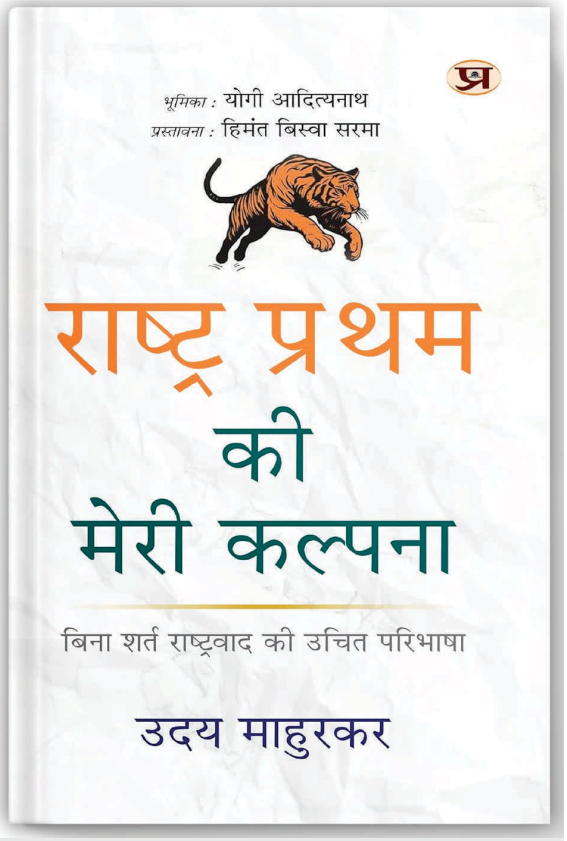
– डॉ. अनिल कुमार निगम, वरिष्ठ पत्रकार

पुस्तक 'My Idea of Nation First: Redefining Unalloyed Nationalism' (हिंदी संस्करण : राष्ट्र प्रथम) लेखक एवं वरिष्ठ पत्रकार उदय माहुरकर की एक महत्त्वपूर्ण वैचारिक कृति है, जो समकालीन भारत में राष्ट्रवाद के बदलते विमर्श को स्पष्ट और प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करती है। वर्ष 2025 में प्रकाशित यह पुस्तक 2026 में व्यापक चर्चा का विषय बनी। लगभग 22 लेखों के इस संकलन में लेखक ने इतिहास, संस्कृति, राष्ट्रीय सुरक्षा, राजनीति और भारतीय सभ्यता से जुड़े अनेक महत्वपूर्ण विषयों पर अपने विचार व्यक्त किए हैं। यह पुस्तक राष्ट्रवाद की अवधारणा को भारतीय संदर्भ में समझने का एक गंभीर प्रयास है।

पुस्तक का मूल संदेश 'Nation First' अर्थात 'राष्ट्र सर्वोपरि' है। लेखक का मानना है कि किसी भी राष्ट्र की प्रगति और स्थिरता का आधार राष्ट्रीय हित को सर्वोच्च प्राथमिकता देना है। उनके अनुसार भारत केवल एक आधुनिक राष्ट्र-राज्य नहीं, बल्कि हजारों वर्षों से विकसित एक सांस्कृतिक और सभ्यतागत राष्ट्र है, जिसकी पहचान उसकी समृद्ध परंपराओं, आध्यात्मिक विरासत और सांस्कृतिक मूल्यों से निर्मित हुई है। पुस्तक भारतीय राष्ट्रवाद को इसी व्यापक सभ्यतागत दृष्टि से देखने का आग्रह करती है।

उदय माहुरकर भारतीय इतिहास, संस्कृति और राष्ट्रीय चेतना के अनेक पक्षों पर विस्तार से प्रकाश डालते हैं। वे भारतीय इतिहास के विभिन्न प्रसंगों को राष्ट्रीय दृष्टिकोण से समझने की आवश्यकता पर बल देते हैं और यह प्रतिपादित करते हैं कि भारत की सांस्कृतिक विरासत उसकी सबसे बड़ी शक्ति है। अयोध्या, काशी, मथुरा, राष्ट्रीय सुरक्षा, सांस्कृतिक पुनर्जागरण तथा भारत की वैश्विक भूमिका जैसे विषयों पर लेखक के विचार पुस्तक को समकालीन संदर्भों से जोड़ते हैं। उनके अनुसार सांस्कृतिक आत्मविश्वास ही एक सशक्त और आत्मनिर्भर राष्ट्र के निर्माण का आधार बन सकता है।

पुस्तक की भाषा सरल, सहज और प्रभावशाली है। लेखक की पत्रकारिता पृष्ठभूमि का प्रभाव पूरे लेखन में स्पष्ट दिखाई देता है। प्रत्येक अध्याय संक्षिप्त, तथ्यपरक और रोचक शैली में लिखा गया है, जिससे पाठक की रुचि अंत तक बनी रहती है। ऐतिहासिक घटनाओं, समकालीन उदाहरणों और वैचारिक विश्लेषण का संतुलित समावेश पुस्तक को पठनीय बनाता है। यही कारण है कि यह पुस्तक केवल शोधार्थियों या राजनीति के विद्यार्थियों के लिए ही नहीं, बल्कि सामान्य पाठकों के लिए भी समान रूप से उपयोगी है।




- पुस्तक का हिंदी संस्करण : राष्ट्र प्रथम
- मूल पुस्तक : My Idea of Nation First: Redefining Unalloyed Nationalism
- लेखक : उदय माहुरकर
- प्रकाशक : प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली
- मूल्य : ₹395 (पेपरबैक)

पुस्तक का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष यह है कि इसमें राष्ट्रीय सुरक्षा, सुशासन, सामाजिक समरसता, आत्मनिर्भर भारत और युवा शक्ति जैसे विषयों को राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया से जोड़कर देखा गया है। लेखक का विश्वास है कि भारत का भविष्य तभी उज्ज्वल होगा, जब प्रत्येक नागरिक अपने व्यक्तिगत हितों से ऊपर उठकर राष्ट्रहित को प्राथमिकता देगा। वे विशेष रूप से युवाओं से भारतीय संस्कृति, इतिहास और राष्ट्रीय मूल्यों को समझने तथा राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भागीदारी निभाने का आह्वान करते हैं।

समग्रतः यह समकालीन भारत में राष्ट्रवाद, सांस्कृतिक चेतना और राष्ट्रीय पहचान पर केंद्रित एक विचारोत्तेजक एवं प्रेरक पुस्तक है। यह पाठक को भारत की सभ्यतागत विरासत, राष्ट्रीय मूल्यों और राष्ट्र निर्माण की अवधारणा पर गंभीरता से विचार करने के लिए प्रेरित करती है। राष्ट्र, संस्कृति और राष्ट्रीय अस्मिता के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने वाली यह पुस्तक उन सभी पाठकों के लिए उपयोगी है, जो भारत की वैचारिक यात्रा और उसके भविष्य को समझना चाहते हैं।

# प्रभु की प्राप्ति

– डॉ. अल्पना बिमल

एक राजा था। वह बहुत न्याय प्रिय तथा प्रजा वत्सल एवं धार्मिक स्वभाव का था। वह नित्य अपने ठाकुर जी की बडी श्रद्धा से पूजा–पाठ और याद करता था। एक दिन ठाकुर जी ने प्रसन्न होकर उसे दर्शन दिये तथा कहा 'राजन् मैं तुमसे बहुत प्रसन्न हैं। बोलो तुम्हारी कोई इछा है?'

प्रजा को चाहने वाला राजा बोला – 'भगवन् मेरे पास आपका दिया सब कुछ हैं आपकी कृपा से राज्य में सब प्रकार सुख–शान्ति है। फिर भी मेरी एक ही ईच्छा है कि जैसे आपने मुझे दर्शन देकर धन्य किया, वैसे ही मेरी सारी प्रजा को भी कृपा कर दर्शन दीजिये।'

'यह तो सम्भव नहीं है'– ऐसा कहते हुए भगवान ने राजा को समझाया। परन्तु प्रजा को चाहने वाला राजा भगवान् से जिद् करने लगा। आखिर भगवान को अपने साधक के सामने झुकना पडा ओर वे बोले ठीक है, कल अपनी सारी प्रजा को उस पहाड़ी के पास ले आना और मैं पहाडी के ऊपर से सभी को दर्शन दूँगा।




ये सुन कर राजा अत्यन्त प्रसन्न हुआ और भगवान को धन्यवाद दिया। अगले दिन सारे नगर मे ढिंढोरा पिटवा दिया कि कल सभी पहाड़ के नीचे मेरे साथ पहुंचे, वहाँ भगवान् आप सबको दर्शन देगें। दूसरे दिन राजा अपनी समस्त प्रजा और स्वजनों को साथ लेकर पहाड़ी की ओर चलने लगा। चलते–चलते रास्ते मे एक स्थान पर तांबे के सिक्कों का पहाड देखा। प्रजा में से कुछ एक लोग उस ओर भागने लगे। तभी ज्ञानी राजा ने सबको सर्तक किया कि कोई उस ओर ध्यान न दे, क्योकि तुम सब भगवान से मिलने जा रहे हो, इन तांबे के सिक्कों के पीछे अपने भाग्य को लात मत मारो।

परन्तु लोभ–लालच में वशीभूत प्रजा के कुछ एक लोग तो तांबे की सिक्कों वाली पहाड़ी की ओर भाग ही गए और सिक्कों कि गठरी बनाकर अपने घर की ओर चलने लगे। वे मन ही मन सोच रहे थे, पहले ये सिक्कों को समेट ले, भगवान से तो फिर कभी मिल ही लेगे।

राजा खिन्न मन से आगे बढे। कुछ दूर चलने पर चांदी के सिक्कों का चमचमाता पहाड़ दिखाई दिया। इस वार भी बचे हुये प्रजा में से कुछ लोग, उस ओर भागने लगे ओर चांदी के सिक्कों को गठरी बनाकर अपने घर की ओर चलने लगे। उनके मन मे विचार चल रहा था कि ऐसा मौका बार–बार नहीं मिलता है। चांदी के इतने सारे सिक्के फिर मिले न मिले, भगवान तो फिर कभी मिल ही जायेगें। इसी प्रकार कुछ दूर और चलने पर सोने के सिक्कों का पहाड़ नजर आया। अब तो प्रजा जनो में बचे हुये सारे लोग तथा राजा के स्वजन भी उस ओर भागने लगे। वे भी दूसरों की तरह सिक्कों की गठरीयां लाद–लाद कर अपने–अपने घरों की ओर चल दिये।

अब केवल राजा ओर रानी ही शेष रह गये थे। राजा रानी से कहने लगे 'देखो कितने लोभी हैं ये लोग। भगवान से मिलने का महत्व ही नहीं जानते हैं। भगवान के सामने सारी दुनियां की दौलत क्या चीज हैं?' सही बात है रानी ने राजा की बात का समर्थन किया और वह आगे बढ़ने लगे कुछ दूर चलने पर राजा ओर रानी ने देखा कि सप्तरंगि आभा बिखरता हीरों का पहाड़ हैं। अब तो रानी से भी रहा नहीं गया, हीरों के आर्कषण से वह भी दौड पड़ी और हीरों कि गठरी बनाने लगी। फिर भी उसका मन नहीं भरा तो साड़ी के पल्लू में भी बांधने लगी।

वजन के कारण रानी के वस्त्र देह से अलग हो गये, परंतु हीरों की तृष्णा अभी भी नहीं मिटी। यह देख राजा को अत्यन्त ही ग्लानि और विरक्ति हुई। बड़े दुःखद मन से राजा अकेले ही आगे बढ़ते गये। वहाँ सचमुच भगवान खड़े उसका इन्तजार कर रहे थे। राजा को देखते ही भगवान मुसकुराये ओर पूछा– कहाँ है तुम्हारी प्रजा और तुम्हारे प्रियजन। मैं तो कब से उनसे मिलने के लिये बेकरारी से उनका इन्तजार कर रहा हूँ।

'राजा ने शर्म और आत्म–ग्लानि से अपना सर झुका दिया।

तब भगवान ने राजा को समझाया कि 'राजन, जो लोग अपने जीवन में भौतिक सांसारिक प्राप्ति को मुझसे अधिक मानते हैं, उन्हें कदाचित मेरी प्राप्ति नहीं होती और वह मेरे स्नेह तथा कृपा से भी वंचित रह जाते हैं..!!' मैं उन्हीं को अपनाता हूं जो लोग सर्व लौकिक मोह को छोड़कर निस्वार्थ भाव से मुझे अपनाते है। उन्हें ही मैं प्राप्त होता हूं।

# AI के दौर में स्मार्ट शहरों की नई तस्वीर

संकलनकर्ता –आर्या कुमारी (छात्रा, आई.एम.एस., गाजियाबाद)




AI के दौर में, तेजी से बदलते शहरों की तस्वीर स्मार्ट शहरों की कल्पना करती है। भारत कल्पनाओं के परे स्मार्ट शहरों के निर्माण की दिशा की ओर दौड़ रहा है। आज स्मार्ट शहरों का अर्थ केवल ऊंची इमारतों, चौड़ी सड़कों और डिजिटल सुविधाओं से नहीं है, बल्कि ऐसे शहरों से है जो तकनीक की मदद से अपनी समस्याओं को साझा करें और उनका समाधान पहले से तैयार कर सकें। इस बदलाव में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

भारत के कुछ हिस्सों में 'स्मार्ट सिटीज मिशन' 2015 में शुरु किए गए थे। जिसके तहत 100 शहरों के भीतर 8,067 परियोजनाएं चलाई गईं। मई 2025 तक इनमें से 94 प्रतिशत परियोजनाएं पूरी हो चुकी थीं और लगभग ₹1.64 लाख करोड़ का निवेश भारत सरकार के द्वारा किया गया। इन सभी शहरों में Integrated Command and Control Centres (ICCC) स्थापित किए गए हैं, जो शहरों के 'डिजिटल दिमाग' के तौर पर काम करते हैं। यहां AI, Internet of Things और Data Analytics की मदद से ट्रैफिक, सुरक्षा, जलापूर्ति और अन्य शहरी सेवाओं की निगरानी होती है।

आज नौकरी और रोज की भागदौड़ सड़कों पर ट्रेफिक के रुप में सामने आती है। वाहनों की अफरा तफरी कई बार दुर्घटना का कारण भी बनती है। शहरी जीवन की चुनौतियों में ट्रैफिक जाम सबसे दृढ़ और असहनीय है। ऐसे में AI आधारित तकनीक ट्रैफिक प्रबंधन को अधिक प्रभावी बनाने में मदद कर सकता है। स्मार्ट कैमरों और सेंसर के जरिए वाहनों की संख्या, यातायात की गति और सड़क पर मौजूद भीड़ का विश्लेषण किया जा सकता है। स्मार्ट कैमरों की मदद से ट्रैफिक नियमों के उल्लंघन की पहचान भी हो सकती है।

कचरा प्रबंधन के क्षेत्र में भी AI और Internet of Things का इस्तेमाल शहरों को अधिक व्यवस्थित और आसान बना रहा है. जैसे स्मार्ट सेंसर कूड़ेदानों का इस्तेमाल जिसके आधार पर सफाई वाहनों के रूट तय किए जा सकते हैं। इससे समय, ईंधन और संसाधनों की बचत होगी। AI शहरों को स्मार्ट बनाने का माध्यम है। भविष्य में स्मार्ट शहरों का सपना तभी साकार होगा जब मानवीय बुद्धिमत्ता, कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रयोग मानवीय जरूरतों के अनुसार उचित स्तर पर करेगी।

# डिजिटल क्रांति से आत्मनिर्भर बनता भारत




आज डिजिटल इंडिया अभियान के कारण भारत तेजी से बदल रहा है। तकनीक अब सिर्फ मोबाइल और इंटरनेट तक सीमित नहीं है, बल्कि न्याय, व्यापार, विज्ञान और नए कारोबार को भी आसान बना रही है। कई भारतीय डिजिटल प्लेटफॉर्म लोगों की रोजमर्रा की जिंदगी को बेहतर बनाने के साथ देश के विकास में भी अहम भूमिका निभा रहे हैं। विज्ञान और अंतरिक्ष के क्षेत्र में इसरो का भुवन (Bhuvan) प्लेटफॉर्म एक बड़ी उपलब्धि है। यह भारत के अपने उपग्रहों से मिली तस्वीरों और जानकारी के आधार पर नक्शे उपलब्ध कराता है। इसका उपयोग खेती, जल संरक्षण, शहरों की योजना बनाने और प्राकृतिक आपदाओं के समय सही जानकारी जुटाने में किया जाता है। न्याय व्यवस्था को आसान बनाने के लिए ई–कोर्ट्स प्लेटफॉर्म काम कर रहा है। इसके जरिए लोग अपने केस की तारीख, सुनवाई की जानकारी और अदालत के आदेश ऑनलाइन देख सकते हैं। इससे लोगों को बार–बार अदालत जाने की जरूरत कम पड़ती है और समय की भी बचत होती है।

व्यापार के क्षेत्र में ओएनडीसी (ONDC) छोटे दुकानदारों और कारोबारियों के लिए नई उम्मीद बनकर सामने आया है। इसके जरिए वे अपने उत्पाद ऑनलाइन बेच सकते हैं और किसी एक बड़ी ई–कॉमर्स कंपनी पर निर्भर नहीं रहते। इससे छोटे व्यापारियों को भी देशभर के ग्राहकों तक पहुंचने का मौका मिलता है। युवाओं को अपना कारोबार शुरू करने में मदद करने के लिए स्टार्टअप इंडिया पोर्टल बनाया गया है। यहां नए उद्यमियों को रजिस्ट्रेशन, सरकारी योजनाओं, निवेश और जरूरी जानकारी एक ही जगह मिल जाती है। इससे युवाओं को नए बिजनेस शुरू करने और रोजगार के अवसर बढ़ाने में मदद मिल रही है। आज ऐसे डिजिटल प्लेटफॉर्म भारत को नई दिशा दे रहे हैं। ये लोगों का काम आसान बना रहे हैं, समय बचा रहे हैं और देश को आत्मनिर्भर बनाने की राह में मजबूत कदम साबित हो रहे हैं।

# वह दीपक जो कभी नहीं बुझता

- सुनीता निगम

उत्तराखंड की पहाड़ियों के बीच बसा एक छोटा–सा गाँव था। वहाँ एक किशोर रहता था, जिसका नाम राघव था। वह पढ़ाई में तेज था, लेकिन आधुनिक जीवन की चकाचौंध से इतना प्रभावित हो गया था कि उसे अपनी भारतीय संस्कृति, परंपराओं और हिंदू धर्म की शिक्षाएँ पुरानी और अनुपयोगी लगने लगी थीं। वह दादा–दादी की बातों पर मुस्कुरा देता और मंदिर जाने या पूजा–पाठ को समय की बर्बादी समझता।

एक दिन गर्मी की छुट्टियों में उसके दादाजी उसे पास के एक प्राचीन आश्रम में ले गए। वहाँ एक वृद्ध संत रहते थे, जिनका जीवन अत्यंत सादा था। आश्रम में हर व्यक्ति स्वयं श्रम करता, पेड़ लगाता, गौसेवा करता और भोजन से पहले ईश्वर का स्मरण करता।




राघव ने संत से पूछा, 'गुरुदेव, आज विज्ञान का युग है। फिर इन परंपराओं और संस्कारों की क्या आवश्यकता है?'

संत मुस्कुराए और बोले, 'बेटा, विज्ञान हमें जीने के साधन देता है, लेकिन संस्कृति हमें जीने का उद्देश्य देती है। साधन और उद्देश्य दोनों का संतुलन ही जीवन को सफल बनाता है।'

उन्होंने राघव को एक दीपक दिया और कहा, 'आज रात इस दीपक को जलाकर पूरे आश्रम का चक्कर लगाना, लेकिन ध्यान रहे कि इसकी लौ बुझनी नहीं चाहिए।'

राघव दीपक लेकर चल पड़ा। उसका पूरा ध्यान केवल दीपक की लौ पर था। वह सावधानी से चला और कुछ देर बाद वापस लौट आया।

संत ने पूछा, 'रास्ते में खिले हुए फूल देखे?'

राघव ने कहा, 'नहीं।'

'तालाब में खिले कमल देखे?'

'नहीं।'

'आकाश में चमकते तारे?'

'नहीं, गुरुदेव।'

संत ने मुस्कुराकर कहा, 'क्योंकि तुम्हारा ध्यान दीपक की लौ पर था। ठीक इसी प्रकार हिंदू धर्म और भारतीय संस्कृति जीवन का वह दीपक हैं, जो हमें लक्ष्य से भटकने नहीं देते। यदि जीवन में सत्य, धर्म, करुणा, सेवा, संयम और कर्तव्य का दीपक जलता रहे, तो संसार की अनेक चमक–दमक हमें विचलित नहीं कर सकती।'

राघव के मन पर इन शब्दों का गहरा प्रभाव पड़ा। उसने पहली बार समझा कि भारतीय संस्कृति केवल पूजा–पद्धति नहीं, बल्कि जीवन जीने की कला है। 'मातृ देवो भव, पितृ देवो भव, आचार्य देवो भव' जैसे उपदेश केवल शब्द नहीं, बल्कि समाज को मजबूत बनाने वाले जीवन–मूल्य हैं।

आश्रम से लौटने के बाद राघव ने अपने व्यवहार में परिवर्तन लाना शुरू किया। वह प्रतिदिन माता–पिता और दादा–दादी का सम्मान करने लगा, समय निकालकर प्रार्थना करने लगा, पर्यावरण संरक्षण के लिए पौधे लगाने लगा और जरूरतमंद बच्चों को पढ़ाने लगा। उसने अनुभव किया कि सेवा और संस्कार से मिलने वाली खुशी किसी भी भौतिक वस्तु से कहीं अधिक स्थायी होती है।

कुछ वर्षों बाद राघव एक सफल विज्ञानी बना। उसने आधुनिक तकनीक का उपयोग मानव कल्याण के लिए किया, लेकिन अपने संस्कारों को कभी नहीं छोड़ा। जब भी उससे उसकी सफलता का रहस्य पूछा जाता, वह मुस्कुराकर कहता, 'मेरी सबसे बड़ी ताकत मेरी भारतीय संस्कृति और हिंदू धर्म से मिले संस्कार हैं। इन्होंने मुझे सिखाया कि ज्ञान तभी सार्थक है, जब उसमें विनम्रता, सेवा और मानवता का प्रकाश हो।'

भारतीय संस्कृति और हिंदू धर्म हमें केवल धार्मिक आस्था ही नहीं, बल्कि सत्य, सेवा, कर्तव्य, सहिष्णुता, करुणा और प्रकृति के प्रति सम्मान का मार्ग भी सिखाते हैं। यही संस्कार व्यक्ति, समाज और राष्ट्र को सशक्त बनाते हैं।

# इक्कीस : साहस, संवेदना और सर्वोच्च बलिदान की अविस्मरणीय गाथा

फिल्म समीक्षा –डॉ. अनुपमा भारद्वाज (मीडिया)




फिल्म : इक्कीस
निर्देशक : श्रीराम राघवन
मुख्य कलाकार : अगस्त्य नंदा, धर्मेंद्र, जयदीप अहलावत एवं अन्य
रेटिंग : ★★★★★ (5/5)

इक्कीस केवल एक युद्ध फिल्म नहीं है, बल्कि साहस, कर्तव्य, प्रेम और सर्वोच्च बलिदान की एक ऐसी भावपूर्ण गाथा है, जो फिल्म समाप्त होने के बाद भी लंबे समय तक मन में बनी रहती है।

निर्देशक श्रीराम राघवन ने इस फिल्म में यह साबित किया है कि वे केवल बेहतरीन थ्रिलर ही नहीं, बल्कि गहरी मानवीय संवेदनाओं से भरपूर सिनेमा भी रच सकते हैं। उन्होंने देशभक्ति को किसी शोर–शराबे या अतिनाटकीय संवादों के सहारे नहीं, बल्कि सादगी, संवेदनशीलता और सशक्त कहानी के माध्यम से प्रस्तुत किया है। यही कारण है कि फिल्म दर्शकों को भावनात्मक रूप से जोड़ती है और कहीं भी बनावटी नहीं लगती।

अगस्त्य नंदा ने सेकंड लेफ्टिनेंट अरुण खेतरपाल की भूमिका में बेहद ईमानदार और प्रभावशाली अभिनय किया है। धर्मेंद्र अपनी गरिमामयी उपस्थिति और सहज अभिनय से हर दृश्य को विशेष बना देते हैं, जबकि जयदीप अहलावत अपने दमदार अभिनय से कहानी को और गहराई प्रदान करते हैं। सहायक कलाकार भी पूरी ईमानदारी से कहानी को आगे बढ़ाते हैं।

फिल्म के युद्ध दृश्य प्रभावशाली हैं, लेकिन इसकी सबसे बड़ी ताकत उसके भावनात्मक क्षण हैं। रणभूमि के साथ–साथ सैनिकों के परिवारों की पीड़ा, गर्व और त्याग को भी बेहद संवेदनशीलता से दिखाया गया है।

छायांकन, बैकग्राउंड स्कोर, वेशभूषा और प्रोडक्शन डिजाइन उस दौर को जीवंत कर देते हैं। पटकथा संतुलित है और संवाद सीधे दिल को छूते हैं।

सबसे अच्छी बात यह है कि फिल्म युद्ध का महिमामंडन नहीं करती, बल्कि उसके मानवीय पक्ष को सामने लाती है। यही संतुलन इक्कीस को एक साधारण युद्ध फ़िल्म से ऊपर उठाकर एक यादगार सिनेमाई अनुभव बना देता है।

आज के दौर में ऐसी फिल्में कम बनती हैं जो मनोरंजन के साथ प्रेरणा भी दें। इक्कीस हमें याद दिलाती है कि देश की सुरक्षा और स्वतंत्रता के पीछे अनगिनत सैनिकों का साहस और सर्वोच्च बलिदान छिपा है। यह फिल्म केवल देखी नहीं जाती, बल्कि महसूस की जाती है।

श्रीराम राघवन और पूरी टीम को इस उत्कृष्ट फिल्म के लिए हार्दिक बधाई। परमवीर चक्र विजेता सेकंड लेफ्टिनेंट अरुण खेतरपाल तथा भारत के सभी वीर सैनिकों को विनम्र नमन। ऐसी प्रेरणादायक फिल्में बार–बार बननी चाहिए ताकि नई पीढ़ी अपने इतिहास और अपने नायकों से प्रेरणा ले सके।

# यंग अचीवर्स

संकलनकर्ता -पल्लवी भारद्वाज, मीडिया छात्रा

**जहाँ एक तरफ नन्हे खिलाड़ी , कलाकार, संगीतकार अपने अभ्यास और सफलता के ज़रिए देश का नाम रोशन कर रहे है वहीं दूसरी ओर यही जज्बा भारत के युवा पीढ़ी ने नवाचार और उद्यमिता के श्रेत्र में बनाई है और आगे भी बना रहे है। देश के अलग अलग राज्यों से निकलकर इन युवाओं ने अपनी काल्पनिक शक्ति, तकनीकी समझ के बल पर समाज और देश के लिए उपयोगी उत्पाद और विभिन्न सेवाएं विकसित कर रहे हैं। आज हम बात करेंगे भारत के ऐसे युवा उद्यमियों की जो बहुत ही कम उम्र में अपने सपनों को साकार कर लाखों युवाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत बने हैं।**

**माना जामपाल :** तेलंगाना की रहने वाली यह 12 वर्षीय बालिका AI आधारित युवा उद्यमी हैं, जिसने आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस (AI) के श्रेत्र में अपनी एक अलग पहचान बनाली हैं। इस बालिका ने केवल 9 वर्ष की आयु में पाइथन प्रोग्रामिंग सीखनी शुरू की और "Voxa" नामक AI पावर्ड वर्चुअल रिसेप्शनिस्ट विकसित कर दिया। यह तकनीक छोटे और माध्यम व्यवसायों के लिए ग्राहकों के फोन कॉल संभालने का काम करती हैं, जिससे उनका समय और संसाधन बचता हैं। उनकी यह सेवा आज भारत, कनाडा, कंबोडिया जैसे देशों में सक्रिय हैं। यही नहीं, माना ने कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय कोडिंग प्रतियोगिताओं में अद्भुत प्रदर्शन कर कई सम्मान प्राप्त किए हैं। आज वह अपनी इस तकनीक के माध्यम से AI को आम लोगों और छोटे व्यापारियों के लिए सुलभ बनाने का अपना उद्देश प्राप्त करने में लगी हुई हैं।



**रौल जॉन अजू :** कोचीन, केरलम के इस बालक ने मात्र 16 वर्ष की आयु में AI Realm Technologies के संस्थापक और मुख्य प्रौद्योगिकी अधिकारी (CTO) के रूप में कार्य कर, तकनीकी दुनिया में तहलका मचाया हैं। यह बालक एक दूरदर्शी युवा उद्यमी, AI इनोवेटर, डिवेलपर हैं, जिससे भारत के उभरते युवा उद्यमियों में गिना जाता हैं। केवल 6वर्ष की आयु में AI सीखने के पश्चात, 12 वर्ष की उम्र में ही उन्हें अपने पहले रोबोट 'MeBot' के जरिए राष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिली। उन्होंने इस कंपनी के माध्यम से विभिन्न व्यवसायों, संस्थानों और सरकारी संगठनों के लिए AI आधारित समाधान विकसित किए हैं। रौल लोगों को चकित कर तब चर्चा का विषय बने जब उन्होंने अपने ही पिता को जोकि आई टी के श्रेत्र में अनुभवी हैं, उन्हें कर्मचारी के रूप में अपने स्टार्टअप में नियुक्त किया। इस बालक ने 10 से अधिक AI टूल्स निर्मित किए है, और कई राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्टारों जैसे India Today Conclave, ET Global Business Summit और Dubai AI Summit में वक्ता के रूप में प्रस्तुत हुए हैं।



**तिलक मेहता :** एक अच्छा विचार बड़ा बदलाव का सकता हैं, इसी को साबित कर केवल 13 वर्ष की उम्र में इस बालक ने अनुभवी धनश्याम पारेख के साथ मिलकर 'Pen N Parcels' (PNP) नामक डोर–टू–डोर लॉजिस्टिक्स और कोरियर स्टार्टअप की स्थापना की। महाराष्ट्र के मुंबई निवासी इस बालक को यह विचार तब आया जब वह मुंबई के ट्रैफिक और धीमी डिलीवरी व्यवस्था के कारण उनकी किताबों की आवश्यकता पूरी न हो पाई। उनके इस स्टार्टअप की सेवा आज शहर के भीतर दस्तावेजों और छोटे पार्सलों की उसी दिन डिलिवरी की सुविधा प्रदान करता हैं, जो उन्होंने प्रसिद्ध डिब्बावालों के व्यापक नेटवर्क को आधुनिक तकनीक से जोड़ कर यह हाइपरलोकल लॉजिस्टिक सेवा विकसित की। आज तिलक की कंपनी को देश के सफल युवा स्टार्टअप में गिना जाता हैं और वह देश के प्रेरणादायक उद्यमियों में शामिल हैं।



**लक्षवीर राव :** हैदराबाद का रहने वाला यह प्रतिभाशाली 8 वर्षीय बालक एक बाल उद्यमी हैं, जो भारत का उभरता हुआ हार्डवेयर इनोवेटर और Projects by Laksh का सह–संस्थापक हैं। बहुत कम उम्र में ही इस बालक ने 200 से अधिक प्रोजेक्ट्स पर कार्य किया है, जिसमें से कुछ प्रख्यात 'Circuit Heroes' नामक बच्चों के लिए एक इंटरैक्टिव कार्ड गेम विकसित किया जो खेल के माध्यम से इलेक्ट्रॉनिक्स और सर्किट की शिक्षा देता हैं, रोबोटिक्स और स्मार्ट किचेन रोबोट 'Cookmate' विकसित कर चुके हैं। वह राष्ट्रीय स्तर पर चर्चा का विषय तब बने जब उन्होंने 2025–26 में हार्डवेयर हैकाथॉन, स्टार्टअप इवेंट्स और मेकर कम्युनिटी में अपने नवाचार का प्रदर्शन कर भारत के बाल उद्यमियों में अपनी एक अलग पहचान बनाई।

# क्रान्तिकारी आशित भट्टाचार्य

- रामकुमार शर्मा, पूर्व प्रधानाचार्य, विद्या भारती

क्रान्तिकारियों ने योजना बना डाली कि इटाखोला डाकखाने से जो डाक के थैले जाते हैं, उन्हें लूट लिया जाय। प्रतिदिन के निरीक्षण से उन्हें यह पता चल गया था कि डाक के थैलों में बीमा किए हुए लिफाफे भी जाते हैं, जिनमें काफी पैसा होता है। उन्हें यह भी मालूम था कि केवल एक निहत्था चपरासी जंगल के रास्ते से रेलवे स्टेशन तक डाक के थैले ले जाता है।

डाक का चपरासी एक बड़ा–सा थैला अपने कंधे पर लाद कर चल दिया। वह थोड़ी दूर ही गया था कि सामने से एक नौजवान हाथ में एक बोतल लिए हुए दिखाई दिया। कुछ दूर और आगे चलने पर एक नौजवान पीछे से आया और उसने डाक के चपरासी को जोर से धक्का देकर गिरा दिया। डाक वाला खड़ा हुआ तो उसके सर पर लोहे की छड़ से कुछ प्रहार किए गए जिससे वह मूर्छित हो गया। इसी बीच चार नौजवान झाड़ियों से निकले और डाक का थैला लेकर चल दिये।

एक खेत में काम कर रहे कुछ किसानों ने इस लूट–मार को देखा तो उन्होंने शोर मचाया। कुछ अन्य गाँव वाले भी इकट्ठा हो गए। उन सबने मिल कर लुटेरों का पीछा किया। वे लोग उनके बिलकुल ही निकट पहुँच गए। एक क्रान्तिकारी ने गोली चला दी तथा एक पीछा करने वाला मारा गया। वह रेलवे का कर्मचारी था। इतना होने पर भी गाँव वालों ने उनका पीछा नहीं छोड़ा। अन्ततोगत्वा उन सभी को दबोच लिया। उन्हें पुलिस के हवाले कर दिया। गिरफ्तार क्रान्तिकारियों में से एक सिलहट का था और शेष टिपरा के थे।

22 जुलाई, 1933 को उन पर मुकदमा चलाया गया। जिसने गोली चला कर एक व्यक्ति की जान ली थी, उसका नाम आशित भट्टाचार्य था। उसे फाँसी का दण्ड सुनाया गया। उसके साथियों में तीन को आजीवन कारावास का दण्ड दिया गया तथा शेष दो को कम समय के कारावास के दण्ड दिया गया।

आशित भट्टाचार्य की उम्र केवल 19 वर्ष थी। उसे 2 जुलाई, 1934 को सिलाई जेल में फाँसी दे दी गयी।

## सपूतों की कहानी

हमें फिर से धरा पर ज्ञान की गंगा बहानी है,
जगत–विख्यात भारत के सपूतों की कहानी है।
विवेकानंद से जग ने नवल अध्यात्म पाया था,
कि सोया कर्म–दर्शन रामतीरथ ने जगाया था,
जला सकती न आग उन्हें, डुबा सकता न पानी है।
जगत–विख्यात भारत के सपूतों की कहानी है।
निशा में उर्वशी को मां कहे इस भूमि का अर्जुन,
निरख रमणी शिवा का मातृभावों से भरा था मन,
यही निष्ठा पुनः सबके चरित्रों में जगानी है।
जगत–विख्यात भारत के सपूतों की कहानी है।
निशा में उर्वशी को मां कहे इस भूमि का अर्जुन,
निरख रमणी शिवा का मातृभावों से भरा था मन,
यही निष्ठा पुनः सबके चरित्रों में जगानी है।
जगत–विख्यात भारत के सपूतों की कहानी है।
हुई है धन्य जिनके त्याग से स्वातंत्र्य–बलिदेवी
भगतसिंह और नेताजी कि जिनके स्वर गगनभेदी,
खुशी से प्राण देना भरतपुत्रों की निशानी है।
जगत–विख्यात भारत के सपूतों की कहानी है।
जवानी वह कि अपने ध्येय को हर मूल्य पर पाए,
जवानी वह कि जिससे काल की भी गति ठहर जाए,
जवानी इंद्र है, शिव है कि भैरव है, भवानी है।
जगत–विख्यात भारत के सपूतों की कहानी है।

केशव संवाद का नवीन अंक पढ़कर मन अत्यंत प्रसन्न हुआ। पत्रिका का सबसे बड़ा गुण यह लगा कि इसमें केवल समाचार ही नहीं, बल्कि उनके पीछे का दृष्टिकोण भी सरल भाषा में प्रस्तुत किया गया है। राष्ट्र जीवन से जुड़े विभिन्न विषयों पर संतुलित लेख पाठकों को सोचने और समाज के प्रति अपने दायित्व को समझने की प्रेरणा देते हैं। मेरा सुझाव है कि प्रत्येक अंक में किसी एक प्रेरक व्यक्तित्व, नवाचार करने वाले शिक्षक, किसान या सामाजिक कार्यकर्ता का विस्तृत परिचय भी प्रकाशित किया जाए। इससे पाठकों को समाज के अनसुने नायकों से परिचित होने का अवसर मिलेगा। केशव संवाद निरंतर राष्ट्र जागरण का माध्यम बना रहे, इसी मंगलकामना के साथ सम्पूर्ण संपादकीय परिवार को हार्दिक बधाई।

सादर,
अवनीश मोहन शर्मा
सीनियर एडवोकेट
इलाहाबाद हाई कोर्ट

केशव संवाद का प्रत्येक अंक ज्ञान और प्रेरणा का सुंदर संगम होता है। नवीन अंक में भारतीय इतिहास, संस्कृति और वर्तमान सामाजिक विषयों पर प्रकाशित सामग्री अत्यंत रोचक लगी। पत्रिका पढ़ते समय ऐसा अनुभव हुआ कि यह केवल जानकारी ही नहीं देती, बल्कि अपने समाज और राष्ट्र के प्रति सकारात्मक सोच भी विकसित करती है। मुझे विशेष रूप से पत्रिका की सादगीपूर्ण भाषा और आकर्षक प्रस्तुति पसंद आई, जिसके कारण हर आयु वर्ग का पाठक इसे सहजता से पढ़ सकता है। मेरा विनम्र सुझाव है कि समय-समय पर विज्ञान, प्रौद्योगिकी, भारतीय वैज्ञानिकों की उपलब्धियों तथा पर्यावरण संरक्षण जैसे विषयों पर भी विशेषांक या नियमित स्तंभ प्रकाशित किए जाएँ। इससे युवाओं और विद्यार्थियों की रुचि और अधिक बढ़ेगी। पत्रिका की निरंतर प्रगति एवं सम्पूर्ण संपादकीय टीम के उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

सादर,
सचिन अवस्थी
अहमदाबाद




केशव संवाद का नवीन अंक पढ़कर अत्यंत प्रसन्नता हुई। विशेष रूप से सर्वोच्च न्यायालय के महत्वपूर्ण निर्णयों पर आधारित लेख बहुत ज्ञानवर्धक और जागरूकता बढ़ाने वाले लगे। इन समाचारों ने पाठकों को देश की न्यायिक व्यवस्था तथा समसामयिक विषयों की बेहतर समझ प्रदान की है। साथ ही, पत्रिका में प्रकाशित प्रेरक लघु कथाएँ भी अत्यंत रोचक और शिक्षाप्रद हैं। मेरा सुझाव है कि पत्रिका में शिक्षा, ग्रामीण विकास तथा युवाओं की प्रेरणादायक उपलब्धियों से संबंधित सामग्री को और अधिक स्थान दिया जाए। इससे पत्रिका की उपयोगिता और भी बढ़ेगी। पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु सम्पूर्ण संपादकीय टीम को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

कर्दम कुमार सिंह
प्राथमिक विद्यालय शिक्षक
सिकंदराराऊ, हाथरस

केशव संवाद का नवीन अंक अत्यंत रोचक एवं विचारोत्तेजक लगा। विशेष रूप से लव जिहाद विषय पर प्रकाशित लेख ने सामाजिक जागरूकता बढ़ाने तथा पाठकों को विषय के विभिन्न पहलुओं पर सोचने के लिए प्रेरित किया। पत्रिका की भाषा सरल, प्रभावशाली और पठनीय है। मेरा सुझाव है कि पत्रिका में युवाओं, महिलाओं एवं विद्यार्थियों से जुड़े विषयों पर अधिक लेख प्रकाशित किए जाएँ। साथ ही, पाठकों की सहभागिता बढ़ाने के लिए प्रश्नोत्तरी, अनुभव साझा करने का मंच तथा युवा लेखकों के लिए विशेष स्तंभ भी जोड़े जा सकते हैं।

पत्रिका की सम्पूर्ण टीम को हार्दिक शुभकामनाएँ।

वर्षा सिंह
जूनियर स्कूल शिक्षिका
एटा

***सूचना : सुधी पाठकों से विनम्र अनुरोध है कि पत्रिका के अध्ययन उपरांत वे इसके विषय-वस्तु, प्रस्तुति एवं कलेवर के संबंध में अपनी बहुमूल्य प्रतिक्रिया अवश्य प्रेषित करें। आपकी प्रतिक्रिया हमारे लिए प्रेरणा एवं मार्गदर्शन का कार्य करेगी। चयनित प्रतिक्रियाओं को 'पाठक का कोना' स्तंभ में आपके नाम सहित प्रकाशित किया जाएगा। आप अपनी प्रतिक्रिया केशव संवाद पत्रिका की ईमेल आईडी*** keshavsamvad@gmail.com ***पर भेज सकते हैं।***

# रोजगार समाचार
## इंटर्नशिप एवं परीक्षा कार्यक्रम

(Employment Advertisements, Internships & Examination Schedule: 01 अगस्त – 31 अगस्त 2026)

~मानस वर्मा
सहायक प्रोफेसर, अर्थशास्त्र
दिल्ली विश्वविद्यालय

| क्रम संख्या (Serial No.) | श्रेणी (Category) | प्रारंभ तिथि (Starting Date) | अंतिम तिथि / परीक्षा तिथि (Last Date / Exam Date) | विज्ञापन / परीक्षा का नाम (Advertisement / Exam Name) | विभाग / संगठन (Organisation) | टिप्पणी / आधिकारिक लिंक (Remarks / Official Link) | QR |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | सरकारी भर्ती (Govt. Recruitment) | 08/06/2026 | 06/08/2026 | Deputy Secretary और अन्य | National Commission for Minorities Educational Institutions | ncmci.nic.in आवेदन करें | |
| 2 | सरकारी भर्ती (Govt. Recruitment) | 13/07/2026 | 11/09/2026 | Administrative Officer, Other Posts | Lal Bahadur Shastri National Academy of Administration (LBSNAA), DoPT | lbsnaa.gov.in आवेदन करें | |
| 3 | सरकारी भर्ती (Govt. Recruitment) | 16/06/2026 | 15/07/2026 | DSSSB Advertisement No. 03/2026 (1,979 Vacancies) | Delhi Subordinate Services Selection Board (DSSSB) | dsssb.delhi.gov.in आवेदन करें | |
| 4 | सरकारी भर्ती (Govt. Recruitment) | 27/06/2026 | 17/07/2026 | UPSC Recruitment Advt. No. 07/2026 (Various Posts) | Union Public Service Commission (UPSC) | upsc.gov.in आवेदन करें | |
| 5 | सरकारी भर्ती (Govt. Recruitment) | 01/07/2026 | 21/07/2026 | JNU Non-Teaching Recruitment 2026 | Jawaharlal Nehru University (JNU) | jnu.ac.in आवेदन करें | |
| 6 | सरकारी भर्ती (Govt. Recruitment) | 02/07/2026 | 31/07/2026 | NCLT Recruitment 2026 (Various Posts) | National Company Law Tribunal (NCLT) | nclt.gov.in आवेदन करें | |
| 7 | सरकारी भर्ती (Govt. Recruitment) | 07/07/2026 | 28/08/2026 | UPPCS Food Safety Officer (FSO) 2026 | Uttar Pradesh Public Service Commission (UPPSC) | uppsc.up.nic.in आवेदन करें | |
| 8 | सरकारी भर्ती (Govt. Recruitment) | 03/07/2026 | 24/07/2026 | Library & Information Assistant (Group C) | National Academy of Defence Production (NADP), MoD | nadp.mod.gov.in आवेदन करें | |
| 9 | सरकारी भर्ती (Govt. Recruitment) | 10/07/2026 | 31/07/2026 | Research Fellow | Tax Policy Research Unit, Department of Revenue, Ministry of Finance | tpcru.gov.in आवेदन करें | |
| 10 | इंटर्नशिप / फेलोशिप (Internship / Fellowship) | 20/07/2026 | 31/08/2026 | AICTE Internship Portal – August 2026 Cycle | All India Council for Technical Education (AICTE) | internship.aicte-india.org आवेदन करें | |
| 11 | इंटर्नशिप / फेलोशिप (Internship / Fellowship) | 05/07/2026 | 20/08/2026 | NITI Aayog Internship Programme 2026 | NITI Aayog | niti.gov.in आवेदन करें | |
| 12 | इंटर्नशिप / फेलोशिप (Internship / Fellowship) | 06/07/2026 | 25/08/2026 | DRDO Summer Internship Programme 2026 | Defence Research & Development Organisation (DRDO) | drdo.gov.in आवेदन करें | |
| 13 | इंटर्नशिप / फेलोशिप (Internship / Fellowship) | 07/07/2026 | 31/08/2026 | RBI Internship Programme August 2026 Batch | Reserve Bank of India (RBI) | rbi.org.in आवेदन करें | |
| 14 | परीक्षा (Examination) | 07/07/2026 | 06 – 17/08/2026 | SSC CGL Tier-I 2026 (Exam) | Staff Selection Commission (SSC) | ssc.nic.in आवेदन करें | |

### इस माह के प्रमुख अवसर (Highlights of the Month)

**प्रमुख भर्ती (Recruitments)**
- LBSNAA Administrative Officer & Others
- DSSSB 1,979 Vacancies
- JNU Non-Teaching
- NCLT Various Posts
- UPPCS FSO 2026
- Library & Information Assistant (NADP)
- Research Fellow (TPRU)

**प्रमुख इंटर्नशिप (Internships)**
- AICTE Internship (August Cycle)
- NITI Aayog Internship
- DRDO Internship
- RBI Internship

**प्रमुख परीक्षाएँ (Examinations)**
- SSC CGL Tier-I (06–17 Aug 2026)
- UPSC Civil Services (Prelims) 2026
- IBPS PO/MT Prelims 23 Aug 2026
- UGC NET Aug 2026 24 Aug 2026

### संकलित स्रोत (Compiled Sources)
- Employment News – employmentnews.gov.in
- UPSC – upsc.gov.in
- SSC – ssc.nic.in
- DSSSB – dsssb.delhi.gov.in
- NCLT – nclt.gov.in
- JNU – jnu.ac.in
- UPPSC – uppsc.up.nic.in
- AICTE Internship Portal – internship.aicte-india.org
- NCS (National Career Service) – ncs.gov.in
- NITI Aayog – niti.gov.in
- RBI – rbi.org.in
- DRDO – drdo.gov.in
- IBPS – ibps.in
- RRB – rrbcdg.gov.in

*सूचीबद्ध संबंधित विभाग की आधिकारिक वेबसाइटें

### महत्वपूर्ण सूचना

अर्थार्थियों को आवेदन या पंजीकरण से पूर्व संबंधित विभाग की आधिकारिक वेबसाइट पर उपलब्ध नवीनतम अधिसूचना एवं पात्रता शर्तों का अवलोकन अवश्य करना चाहिए।

सशक्त युवा – सशक्त भारत

*Only Design is AI Generated*

# प्रेरणा विमर्श 2026

## 19 एवं 20 सितम्बर 2026

# उत्कर्ष : नारी सम्मान, युवा स्वाभिमान

## नारी शक्ति राष्ट्र वंदन यज्ञ

### शनिवार, 19 सितम्बर, 2026



## वैचारिक मंथन

### रविवार, 20 सितम्बर, 2026

| विशेष वर्ग | युवा सोच, नया भारत |
|---|---|
| 1. उद्यमी | 1. मीडिया शिक्षक |
| 2. समाज सेवी | 2. मीडिया विद्यार्थी |
| 3. प्रोफेशनल | 3. महाविद्यालीय शिक्षक |
| 4. पत्रकार | 4. महाविद्यालीय विद्यार्थी |
| 5. कला संस्कृति | 5. लॉ कॉलेज शिक्षक एवं विद्यार्थी |
| 6. साहित्यकार | 6. शोधार्थी |
| 7. पंच परिवर्तन | 7. प्रोफेशनल कॉलेज शिक्षक एवं विद्यार्थी |
| 8. लेखक | 8. चित्र भारती फिल्म आयोजन |
| 9. इन्फ्लुएंसर्स | |

## समापन समारोह

### रविवार, 20 सितम्बर, 2026

**कार्यक्रम स्थान : गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय, ग्रेटर नोएडा**